Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 5

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

24 जमादी अव्वल 1440 हिजरी कमरी 31 सुलह 1397 हिजरी शमसी 31 जनवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

अगर गुनाह ना होता तो अहंकार का ज़हर इंसान में बढ़ जाता है और वह हलाक हो जाता। तौबः इस को दूर करती है। अंहकार और गर्व की आफत से गुनाह इंसान को बचाए रखता है। जब मासूम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को 70 बार तक इस्तिग़फार करना चाहिए तो हमें क्या करना चाहिए? गुनाह से तौबः वही नहीं करता जो उस पर राज़ी हो जाए और जो गुनाह को गुनाह जानता है वह आख़िर में उसे छोड़ेगा।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

बैअत तथा तौबः

बैअत तथा तौबः में जानना चाहिए कि क्या लाभ हैं और क्यों इसकी आवश्यकता है? जब तक किसी चीज़ का लाभ और मूल्य ज्ञात ना हो तो उस समय तक आंखों के अंदर नहीं समाती। जैसे घर में इंसान के कई प्रकार के माल तथा सामान होते हैं जैसे रुपया, पैसा, कौड़ी, लकड़ी इत्यादि तो जिस किस्म की जिसे आवश्यकता है इसी स्तर की इसकी हिफाज़त की जाएगी। एक कौड़ी की सुरक्षा के लिए वह सामान न करेगा जो पैसा रूपया के लिए उसे करना पड़ेगा और लकड़ी वग़ैरह को तो यूं ही एक कोना में डाल देगा। इसी तरह जिस के नष्ट होने का उस को सबसे अधिक नुकसान है उस कि अधिक सुरक्षा करेगा। इसी तरह बैअत में अज़ाम बात तौबः है जिसके अर्थ लौटने के हैं तो इस अवस्था का नाम है कि इंसान अपने गुनाह से जिन से उसके संबंध बड़े हुए हैं और उसने अपना वतन उन्हें बना लिया हो मानो कि गुनाह में उसने निवास कर लिया हो उस वतन को छोड़ना और रुजूअ के अर्थ पवित्रता को धारण करना है। अब वतन को छोड़ना है कितना कष्टदायक होता है और हज़ारों कष्ट होते हैं। एक घर जब इंसान छोड़ता है तो किस कदर उसे कष्ट होता है और वतन को छोड़ने में तो उसको सब यार दोस्तों से संबंध विच्छेद करना पड़ता है। और सब चीज़ों को जैसे चारपाई फर्श, पड़ोसी वे गलियां बाज़ार सब छोड़-छाड़ कर एक नए देश में जाना पड़ता है यानी उस पुराने देश में कभी नहीं आता। इसका नाम तौबः है। गुनाहों के दोस्त अन्य होते हैं और तक्वा के दोस्त अन्य। इस परिवर्तन को सूफियों ने मृत्यु कहा है जो तौबः करता है उसे बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सच्ची तौबा के समय बड़े बड़े कष्ट उसके सामने आते हैं और अल्लाह तआला रहीम तथा करीम है वह जब तक इस सारे का बदला न प्रदान करे नहीं मारता।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ

(सूरह अल्बकर: 232) इसमें यही इशारा है कि वह तौबः करके दरिद्र असहाय हो जाता है इसीलिए अल्लाह तआला उस से मुहब्बत और प्यार करता है और उसे नेकों की जमाअत में शामिल करता है दूसरी कौमें ख़ुदा को रहीम तथा करीम नहीं मानतीं। ईसाइयों ने खुदा को ज़ालिम जाना और बेटे को रहीम के बाप तो गुनाह ना क्षमा करे और बेटा जान देकर क्षमा करवाए । बड़ी अज्ञानता है क्या बाप-बेटे में इतना अंतर हो। पिता तथा पुत्र में चरित्र, आदतों में तुलना होती है मगर यहां तो बिल्कुल ही नहीं है। अल्लाह रहीम न होता तो इंसान एकदम भी गुज़ारा ना होता जिसने इंसान के कर्म से पहले हज़ारों चीज़ें उसके लिए लाभदायक बनाईं तो क्या यह गुमान हो सकता है कि तौबा और अमल को स्वीकार ना करे।

गुनाह और तौबः की वास्तविकता

गुनाह की यह वास्तविकता नहीं है कि अल्लाह तआला गुनाह को पैदा करे और फिर हज़ारों वर्ष के बाद गुनाह की माफी सूझे। जैसे मक्खी के दो पर होते हैं एक में शिफा है और दूसरे में विष। इसी तरह इंसान के दो पर हैं एक गुनाह का और दूसरा लज्जा, तौबः और परेशानी का। यह नियम की बात है जैसे एक व्यक्ति जब ग़ुलाम को बहुत मारता है तो फिर उसके बाद पछताता है मानव के दोनों पर एक साथ हरकत करते हैं विष के साथ शिफा है। अब प्रश्न यह है कि ज़हर क्यों बनाया गया? तो जवाब यह है कि मानो विष है मगर तत्व बनाने से ठीक करने का आदेश रखता है। अगर गुनाह ना होता तो अहंकार का ज़हर इंसान में बढ़ जाता है और वह हलाक हो जाता। तौबः इस को दूर करती है। अंहकार और गर्व की आफत से गुनाह इंसान को बचाए रखता है। जब मासूम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को 70 बार तक इस्तिग़फार करना चाहिए तो हमें क्या करना चाहिए? गुनाह से तौबः वही नहीं करता जो उस पर राज़ी हो जाए और जो गुनाह को गुनाह जानता है वह आख़िर में उसे छोड़ेगा।

हदीस में आया है कि जब इंसान बार-बार रोकर अल्लाह तआला से क्षमा चाहता है तो आखिर में ख़ुदा कह देता है कि हम ने तुझ को क्षमा कर दिया अब तेरा जो जी चाहे करे इसका यह अर्थ है इसके दिल को बदल दिया और अब उसे तबीयत में बहुत बुरा मालूम होने लगा जैसे भेड़ को मैला खाते देख कर कोई दूसरा लोभ नहीं करता कि वह भी खाए, इसी तरह वह इंसान भी गुनाह न करेगा जिसे खुदा ने क्षमा कर दिया है। मुसलमानों को सुअर के गोश्त से तबीयत में ही एक घृणा है और दूसरा हज़ारों काम करते हैं जो हराम और मना हैं तो इसमें यही हिक्मत है कि एक नमूना कराहत का रख दिया और समझा दिया है कि इसी तरह इंसान को गुनाह से नफरत हो जाए

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-5)

मेहमानान किराम से मुलाकात

सब से पहले इस्लाम का मूल सिद्धांत यह है कि जहां व्यक्ति शांति से रहता है वहाँ उस का कर्तव्य है कि वह दूसरों के लिए भी शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करे।

* जलसा सालाना जर्मनी कि अवसर पर जर्मन तथा अन्य लोगों से सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मेहमानान किराम से मुलाकात

उसके बाद अफ्रीका के देशों जाम्बिया, नाइजर, घाना, सेनेगल, कांगो ब्राजील से आने वाले

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब एक बज कर पैंतालीस मिन्ट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

उसके बाद, लज्ना तथा और नासरात के विभिन्न सदस्यों ने निम्नलिखित समूहों ने अपनी भाषाओं में दुआ वाली नज़्में तथा तरानों को प्रस्तुत किया। घाना, गाम्बिया, जमाअत , बोस्निया, इंडोनेशिया, स्पेनिश, अरबी, मैसेडोनिया, तुर्की, उर्दू और जर्मन।

उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला कम उमर वाले के बच्चों के हॉल में प्रवेश किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ को अपने बीच पा कर बच्चों तथा माताओं की ख़ुशी का कोई सीमा न रही। औरतों ने प्यारे आक़ा का दर्शन किया इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास पर पधारे।

प्रोग्राम के अनुसार शाम चार बजे जर्मन तथा अन्य कौम के मेहमानों के साथ शामिल होने के लिए मर्दाना हाल में पधारे। इन मेहमानों के साथ यह कार्यक्रम कुछ समय पहले से जारी था।

इस कार्यक्रम में शामिल मेहमानों की संख्या 1021 थी। जर्मनी के विभिन्न शहरों से आने वाले मेहमानों की संख्या 525 थी जबकि जर्मनी के अलावा अन्य यूरोपीय देशों बुल्गारिया, मसीडोनिया, अल्बानिया, बोज़निया, कोसोवो, हंगरी, क्रोएशिया, लिथुआनिया, कज़ाखिस्तान, ताज़किस्तान, एस्टोनिया, स्लोवेनिया, जॉर्जिया, आदि से 320 मेहमान शामिल हुए अरब देशों से आने वाले मेहमानों की संख्या 93 थी। जबकि अफ्रीका के 13 मेहमान और एशियाई देशों के 70 मेहमान कार्यक्रम में शामिल हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के आगमन के बाद कार्यक्रम का आरम्भ तिलावत कुरआन से हुआ जो प्रिय सादिक अली बट साहिब मुरब्बी सिलसिला ने की और बाद में इसका जर्मन भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। बाद में शाम 4 बजकर, 8 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अंग्रेज़ी में संबोधन किया। हुज़ूर अनवर के ख़िताब का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है।

जर्मन मेहमानों से हुज़ूर अनवर का ख़िताब

तशह्हद तऊज़ तथा तस्मिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहो ! आप सभी पर अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें हों। कुछ समय से जर्मनी तथा अन्य यूरोपीय देशों में दाएं हाथ की पार्टियों से ज़ोर पकड़ लिया है। इस परेशान करने वाली प्रवृत्ति का मुख्य कारण यह है कि इन देशों के स्थानीय निवासी निराश हो रहे हैं। वे महसूस कर रहे हैं कि जैसे उन के अपने शासकों और सरकारों ने उन के अधिकारों को अनदेखा कर रहे हैं और उनकी रक्षा नह कर पार रहे हैं। बेशक, उनकी परेशानी के बढ़ना का एक कारण अप्रवासी भी हैं जो हाल के वर्षों में कई यूरोपीय देशों में आए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जर्मनी भी इसी स्थिति से जूझ रहा है, जिसने अन्य देशों की तुलना में शरणार्थियों की एक बड़ी संख्या को स्वीकार कर लिया है। कई स्थानीय लोग डरते हैं जिसके परिणाम स्वरूप समाज में एक अजीब परिवर्तन पैदा हो रहे हैं। उन्हें लगता है कि अप्रवासियों के लिए अनुचित तरीके से उनके देश के संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है। कई लोगों के लिए असली समस्या इस्लाम है, लेकिन इसके लिए आप्रवासी शब्द का उपयोग किया जाता है। दरअसल, आप्रवासियों में से कई आप्रवासी मुस्लिम हैं जो मध्य पूर्व के प्रभावित देशों से भाग रहे हैं। इसलिए जब वे दाएं हाथ के आप्रवासन कानूनों के ख़िलाफ जलसा के लिए बुलाते हैं, तो उनका मूल लक्ष्य इस्लाम ही होता है। उनका उद्देश्य इन देशों में मुसलमानों के प्रवेश को रोकना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ फरमाया: ऐसे लोग यह विचार फैलाने की कोशिश करते हैं कि इस्लाम पश्चिमी मूल्यों के साथ असंगति रखता है और यह कि मुसलमान पश्चिमी समाज में एकीकृत नहीं हो सकते। तो वे अन्य नागरिकों के लिए खतरा हैं। फिर कई ग़ैर मुस्लिम यह मानते हैं कि इस्लाम चरमपंथी धर्म है और सोचते हैं कि वे मुसलमान जो हिजरत करके आ रहे हैं वे चरमपंथी और कट्टरपंथियों में से होंगे, समाज में ज़हर फैलाएंगे, भेदभाव पैदा करेंगे और उन की क़ौम के अमन तथा समृद्धि को नुकसान पहुंचाएगा। बेशक, इस तरह की आवाज़ें विशेष रूप से पूर्वी जर्मनी में सुनी गई हैं। इसलिए वहां तहरीकें चल रही हैं और कोशशि हो रही है कि मस्जिद न बनाई जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "हम अहमदिया जमाअत इस तरह के विरूद्ध से सुरक्षित नहीं हैं। जैसा कि यहां जर्मनी के कुछ समूहों ने हमारे ख़िलाफ तहरीकें चलाई हैं और हमें एक नई मस्जिद बनाने से रोकने की कोशिश की है। उन्होंने हमारे ख़िलाफ भी तहरीक़ चलाई, हालांकि हमारा आदर्श वाक्य यह है कि "मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं। और हमारी जमाअत पिछले 130 वर्षों से दुनिया में प्यार, प्रेम और सद्भाव को फैल रही है। हमारा इतिहास गवाह है कि जब भी हम ने एक मस्जिद बनाई तो जल्द ही पड़ोसियों के भय दूर हो जाते हैं। जिन लोगों ने हमें पहली बार संदेह के रूप में देखा, वे हमारे ईमानदार मित्र और समर्थक बन गए। सारी दुनिया में हमारे पड़ोसी इस बात की गवाही देते हैं कि अहमदी मुस्लिम समाज में शांति फैला रहे हैं। ये लोग दुनिया में शांति संदेश फैलाते हैं और मानवता की सेवा करते हैं। लेकिन बाक़ी मुस्लिम दुनिया की गंभीर स्थिति के बावजूद, अहमदिया मुस्लिम जमाअत को भी इस के परिणाम भुगतने पड़े हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "एक और आरोप जो अप्रवासियों के प्रवेश के विरोध में लोग करते हैं कि लिए यह लोग करते हैं कि यह शरणार्थी महिलाओं के यौन उत्पीड़न करने की अधिक संभावना रखते हैं। अफसोस की बात यह है कि हाल के रिपोर्टों के मुताबिक, यूरोपीय देश में शरणार्थियों के अधिक अनुपात में महिलाओं के बलात्कार के मामलों या उनके प्रयासों में शामिल व्यक्तियों में अधिक अनुपात शरणार्थयों का है। यह तो अल्लाह तआला ही जानता है कि ये आंकड़े कितने सटीक हैं। लेकिन जब ऐसी रिपोर्ट आम होती है, तो वह अन्य देशों को भी प्रभावित करती हैं, और स्थानीय लोगों के भय और चिंताओं को बढ़ाती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "एक और

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मैं अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि अपनी पत्नी में सिवाए भलाई के और कोई बात मुझे पता नहीं।

बद्री सहाबी हज़रत मिस्तह बिन उसासा रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की सीरत मुबारका का उल्लेख अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा फरमाता चला जाए।

इफक़ की घटना पर विस्तार से चर्चा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 दिसम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ـ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ـ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ـ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ـ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ـ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ـ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ـ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ـ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ـ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

सहाबा के उल्लेख में आज हज़रत मिस्तह बिन उसासा का उल्लेख होगा। उनका नाम औफ और उपनाम मिस्तह था उनकी माँ हज़रत उम्मे मिस्तह सलमा पुत्री सख़र थीं जो हज़रत अबु बकर रज़ियल्लाहो तआला की ख़ाला रीत: पुत्री सख़र की बेटी थीं।

(अलअसाब: भाग 6, पृष्ठ 74), मिस्तह बिन उसासा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1995 ई)(असदुल ग़ाब: भाग 5 पृष्ठ 150 मिस्तह बिन उसासा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)(अल्इस्तियाब भाग 4 पृष्ठ 1472 मिस्तह बिन उसासा प्रकाशन दारुल जैल बैरूत1992 ई)

हज़रत मिस्तह बिन उसासा ने हज़रत उबैदा बिन हारिस और उनके दो भाइयों हज़रत तुफ़ैल बिन हारिस हज़रत हुसैन बिन हारिस के साथ मक्का से हिजरत की। यात्रा से पहले तय हुआ कि यह लोग घाटी नाजह में जमा होंगे लेकिन हज़रत मिस्तह बिन उसासा पीछे रह गए क्योंकि उन्हें यात्रा के दौरान सांप ने काट लिया था। अगले दिन उन जो पहले चले गए हज़रत मिस्तह के सांप के डसे जाने की सूचना मिली तो वे वापस आए और उन्हें साथ लेकर मदीना आ गए। मदीना में सब लोग हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सलमा के यहाँ ठहरे। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 37 उबैदा बिन हारिस मुद्रित प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मिस्तह बिन उसासा और ज़ैद बिन मुज़य्यन के बीच भाईचारा का रिश्ता कायम किया था। हज़रत मिस्तह जंग बदर सहित अन्य सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 39 मिस्तह बिन उसासा प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990)

हिजरत के आठ महीने के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस को साठ या एक रिवायत के अनुसार अस्सी सवारों के साथ रवाना किया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदा बिन हारिस के लिए एक सफेद रंग का झंडा बांधा, एक झंडा बनाया जिसे मिस्तह बिन उसासा ने उठाया। इस जंग का मतलब यह था कि क़ुरैश के वाणिज्यिक काफिले को रास्ते में रोक लिया जाए। क़ुरैश के काफिले का अमीर अबू सुफ़यान था, कुछ के अनुसार इकरमह बिन अबू जहल और कुछ के अनुसार मिकरज़ बिन हफ्स था। इस काफिले में 200 आदमी थे जो माल लेकर जा रहे थे। सहाबा की इस जमाअत ने राबिग घाटी में इस काफिला को जा लिया, इस स्थान को वद्दान भी कहा जाता है। यह क़ाफिला केवल व्यावसायिक काफिला नहीं था बल्कि युद्ध के सामानों से सुसज्जित भी था और इस काफिला की जो आय होनी थी वह भी मुसलमानों के ख़िलाफ युद्ध में इस्तेमाल होनी थी क्योंकि घटनाओं से पता लगता है कि वह पूरी तरह से तैयार थे। बहरहाल ये लोग जब गए तो दोनों पक्षों के बीच तीरंदाजी के अलावा कोई मुकाबला नहीं हुआ और लड़ाई के लिए नियमित पंक्तियां नहीं हुई। पहले भी इसका एक और सहाबी के उल्लेख एक बार उल्लेख हो चुका है। वह सहाबी जिन्होंने मुसलमानों की ओर पहला तीर चलाया वह हज़रत साद बिन अबी वक़्कास थे और वह पहला तीर था जो इस्लाम की तरफ से चलाया गया। इस अवसर पर हज़रत मक़दाद बिन असवद और हज़रत उयैनः बिन गज़वान (सीरत इब्ने हिशाम और तारीख़ तिबरी में उतबह बिन गज़वान है) मूर्तिपूजकों की जमाअत से निकल कर मुसलमानों में आ मिले क्योंकि इन दोनों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था और वह मुसलमानों की तरफ जाना चाहते थे। हज़रत उबैदा बिन हारिस के नेतृत्व में यह इस्लाम की दूसरी जंग थी। तीरंदाज़ी के बाद दोनों पक्ष पीछे हट गए। (पहले भी किसी ख़ुत्बा में एक बार उल्लेख हो चुका है) और मुशरिकीन में मुसलमानों का इस कदर भय था कि उन्होंने यह समझा कि मुसलमानों का बहुत बड़ा लश्कर है जो उनकी मदद कर सकता है। इसलिए वे डर के मारे वापस चले गए और उनका पीछा नहीं किया।

(अस्सीरतुल हलुबिया भाग 3 पृष्ठ 215-216 सिरया उबैद बिन हारिस प्रकाशन दारुलकुतुब अल्इलिमया बैरूत 2002 ई)(सीरत इब्ने हश्शाम भाग 1 पृष्ठ 592 सिरया उबैदह बिन अलहारिस प्रकाशन मुस्तफा अलबाबी मिस्र 1955 ई) (तारीख अत्तिबरी जिल्द 2 पृष्ठ 12 साल 1 सन हिजरी प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1987) क्योंकि उद्देश्य युद्ध नहीं था केवल उन्हें रोकना था और यह सबक देना था कि मुसलमानों के ख़िलाफ अगर वह तैयारी करेंगे तो मुसलमान भी तैयार हैं।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर के अवसर पर हज़रत मिस्तह और इब्ने इलियास को पचास वसक अनाज प्रदान फरमाया (उस समय माले ग़नीमत(युद्ध में प्राप्त माल) में यह दिया जाता था तब्काते कुबरा में ये बातें लिखी हैं।) उनकी मृत्यु 56 वर्ष की उम्र में 34 हिजरी में हज़रत उस्मान के दौरे ख़िलाफ़त में हुई और यह भी कहा जाता है कि आप हज़रत अली के दौरे ख़िलाफ़त तक जीवित रहे और हज़रत अली के साथ जंग सिफ़्फ़ीन में शामिल हुए और इसी साल 37 हिजरी में वफात पाई।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 39 मिस्तह बिन उसासा प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (अल्असाब: जिल्द 6 पृष्ठ 74 मिस्तह बिन उसासा प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत मिस्तह वही व्यक्ति हैं जिनके खाने पीने की व्यवस्था हज़रत अबू बकर किया करते थे उन के ज़िम्मे था। लेकिन जब हज़रत आयशा पर आरोप लगाया गया तो आरोप लगाने वालों में हज़रत मिस्ताह भी शामिल हो गए और हज़रत अबू बक्र ने उस समय कसम खाई कि वह उन का संरक्षण नहीं करेंगे जिस पर यह आयत नाज़िल हुई।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُّؤْتُوْا أُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ـ أَلَا تُحِبُّوْنَ أَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(अन्नूर: 23)

और तुम में से सम्मान वाले तथा सामर्थय वाले अपने करीबियों तथा दरिद्रों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को कुछ न देने की कसम न खाएं अत: चाहिए कि क्षमा करें। क्या तुम यह पसन्द नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला, सबसे दयालु हो।

बहरहाल यह आयत नाज़िल हुई। हज़रत अबू बकर ने इस पर फिर से उन का खाना पीना जारी कर दिया, और जब अल्लाह तआला ने हज़रत 'आयशा 'को

बरी कर दिया तो फिर आरोप लगाने वालों को दंड भी दिया गया। कुछ रिवायतओं के अनुसार, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत आयशा पर आरोप लगाने वाले जिन लोगों को कौड़े लगवाए थे उन में हज़रत मिस्ताह भी शामिल थे।

(अलअसाब: भाग 6, पृष्ठ 74, मिस्तह बिन उसासा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 1995 ई)

यह इफिक का आरोप लगाने की यह चूंकि यह एक बहुत प्रमुख घटना है क्योंकि यह एक बड़ी ऐतिहासिक घटना है, एक महत्वपूर्ण घटना है। ऐतिहासिक घटना तो नहीं एक महत्त्वपूर्ण घटना है और इसमें मुसलमानों के लिए एक सबक भी है, इसलिए इसका वर्णन भी बहुत लिखा गया है। और अल्लाह तआला ने इस बारे में कुरआन करीम में इसके बारे में आयतें भी नाज़िल फरमाई। बहरहाल इस का उल्लेख करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

अल्लाह तआला ने अपने आचरण में यह शामिल कर रखा है कि वह वईद की भविष्यवाणी को तौब: और पश्चाताप तथा दुआ एवं सदक़ा से टाल देता है इसी तरह मनुष्य को भी उस ने यह आचरण सिखाए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस घटना के का वर्णन कर के वादे और वईद के बीच अंतर का उल्लेख किया है। फिर आप फरमाते हैं,

"जैसा कि कुरआन और हदीस से यह प्रमाणित होता है कि हज़रत आयशा के बारे में जो मुनाफकीन ने केवल ख़बासत से आरोप लगाए थे इन बातों में कुछ सीधी तबीयत के सहाबा भी शामिल हो गए थे । इन का उद्देश्य फित्ना नहीं था बल्कि सीधी तबीयत होने के कारण शामिल हो गए। एक सहाबी ऐसे था कि वह हज़रत अबू बक्र के घर से दो वक्त की रोटी खाते थे। हज़रत अबू बक्र ने इस गलती पर कसम खाई थी और वईद के तौर पर वादा किया कि मैं इस व्यर्थ कार्य के कारण उसे कभी रोटी नहीं दूंगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सूरत अन्नूर 23) तब हज़रत अबू बक्र ने अपनी कसम को तोड़ा और पहले की तरह रोटी लगा दी। इसलिए इस्लामी आचरण में यह शामिल है कि "(यहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह मस्ला हल किया है) यदि वईद के तौर पर कोई प्रतिज्ञा की जाती है, तो उसे तोड़ना एक अच्छा तरीका है।" वईद क्या है? "फरमाया कि," उदाहरण के लिए, अगर कोई भी किसी नौकर के बारे में कसम खाता है, कि मैं निश्चित रूप से उसे पचास जूते मारूंगा, तो फिर उसकी तौब: और गिड़िगड़ाने पर माफ करना इस्लाम की सुन्नत है। ताकि अल्लाह तआला के आचरण के समान हो जाए। परन्तु वादा को देर करना उचित नहीं वादा को छोड़ देने पर पूछा जाएगा मगर वईद के छोड़ने पर नहीं।

(परिशिष्ट ब्राहीन अहमदिया भाग 5 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 181)

वादा एक इस तरह की प्रतिज्ञा है जो सभी नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं को सामने रख कर जाता है और इसका प्रतिबंध आवश्यक है। उस को तोड़ना फिर उस की पूछताछ भी होगी या कुछ जुर्माना भी होगा।

साहिब बुख़ारी की रिवायत के अनुसार, हज़रत आयशा ने इफक की घटना को वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि इसका विवरण के क्यों यह महत्त्वपूर्ण है। इसलिए, मैं भी अब आपको यह बता रहा हूं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी सफर में जाने का इरादा फरमाते थे, तो आप अपनी पत्नियों के बीच कुरआ डालते फिर जिस का कुर्आ निकलता उस को आप अपने साथ ले जाते थे। अत: आपने एक बाहरी हमले के दौरान हमारे मध्य में कुर्अ: डाला। हज़रत आयशा फरमाती हैं कि कुर्अ: मेरे नाम निकला। मैं आप के साथ गई। उस समय हिजाब का आदेश नाज़िल हो चुका था, पर्दे का आदेश आ चुका था। मैं होदज में बिठाई जाती (होदज, जो ऊंट के ऊपर सवारी की जगह बना होता है, ढंका होता है), और होदज समेत उतारी जाती है। कहती हैं हम इसी तरह सफर में पढ़ में रहे। जब रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने हमले से फारिग़ हुए और वापस लौट आए और हम मदीना के क़रीब थे कि आपने एक रात कूच का आदेश दिया। जब लोगों ने कूच की घोषणा की, तो मैं भी चल पड़ी और सेना से आगे निकल गई। कहती हैं मैं पैदल ही चल पड़ी। क्योंकि पाख़ाना के लिए जाना था, तो एक तरफ होकर चली गईं जब मैं अपनी ज़रूरत से फारिग़ हुई तो अपने होदज में चली गई और मैंने अपने सीने पर हाथ रखा तो क्या देखती हूं कि ज़फार के काल रंग का मेरा हार गिर गया है। एक हार पहना हुआ था वह गिर गया था। कहती हैं कि मैं अपना हार तलाश करने के लिए वापस लौटी। उस की तलाश में मुझे रोके रखा और मुझे कुछ समय लग गया। इतने में वे लोग जो मेरे ऊंठ को तलाश करते थे आए और उन्होंने मेरा होदज उठा लिया और वह होदज मेरे ऊंठ के ऊपर रख दिया था, जिस पर मैं सवार हुआ करता था। वह खाली थी। लेकिन वे समझे कि मैं इस में हूं। कहती हैं कि महिलाएं उन दिनों हल्की फुल्की हुआ करती थीं। भारी नहीं थे उसके शरीर पर ज्यादा मांस नहीं था। वह थोड़ा खाती थी। जब लोगों ने दोजद को उठाया, तो उन्होंने बोझ को असामान्य न समझे। यह महसूस नहीं हुआ कि यह हल्का है। हज़रत आयशा कहती हैं कि उन्होंने उसे उठा लिया और मैं एक कम आयु की लड़की थी। उन्होंने ऊंट को उठा कर चल चला दिया और ख़ुद भी चल दिए। जब सारा लश्कर गुज़र गया और इस के बाद मैं ने अपनी हार भी ढूंढ लिया तो मैं डेरे में वापस आ गई।। वहां कोई भी नहीं था। फिर मैं अपने डेरे की तरफ वापस आ गई जिस में मैं थी और मैंने सोचा कि वे मुझे न पाएंगे, तो वे वापस यहीं लौट आएंगे। कहता हैं, मैं बैठी हुई थी इसी समय में मेरी आंख लग गई और मैं सो गई।

सफवान बिन मुअतल सुलमा ज़कवानी सेना के पीछे रहते थे। एक आदमी पीछे होता था, ताकि देख ले कि काफला चला गया है तो कोई चीज़ पीछे न रह गई हो। कहती हैं वह सुबह डेरे पर आए और उन्होंने एक सोए हुए इन्सान का वुजूद देखा और मेरे पास आए। और पर्दे के आदेश से पहले उन्होंने मुझे देखा हुआ था। वापस आए तो उन्होंने इन्ना लिल्लाह पढ़ा। इन के इन्ना लिल्लाह पढ़ने पर मैं जाग उठी। उसके बाद, पहले ऊँटनी निकट ले आए, और जब उन्होंने अपनी ऊंटनी बिठाई तो मैं उस पर सवार हो गई और वह ऊँट की नकेल पकड़ कर चल पड़े। कहती हैं यहां तक कि हम फौज में उस समय तक पहुंचे जब लोग दोपहर को आराम करने के लिए डेरों में थे। फिर जिस को हलाक होना था, वह मारा गया। अर्थात इस बात पर लोगों में आरोप लगने लगे। ग़लत किस्म की बातें हज़रत आयशा की तरफ लगाना शुरू कर दीं।

फरमाती हैं कि इस आरोप का संस्थापक अब्दुल्ला इब्न अबी बिन सुलुल था। हम मदीना पहुंचे। मैं वहां एक महीने तक बीमार रही। आरोप लगाने वालों की बातों का लोग चर्चा करते रहे। और मेरी इस बीमारी के मद्देनजर, मुझे जो बात संदेह में डालती थी, वह यह थी कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वह मेहरबानी न देखती थी जो मैं आप से अपनी बीमारी में देखा करती थी। बड़ा चर्चा हो गया। आरोप लगाया प्रसिद्ध हो गया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक भी बात पहुंची। कहती हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बीमारी में जो व्यवहार मेरे साथ पहले हुआ करता था वह मैंने नहीं देखा। आप केवल अन्दर आते और अस्सलामो अलैकुम कहते। फिर पूछते कि अब वह कैसी है। और वह भी अपने माता पिता से पूछ लेते। कहती हैं कि मुझे इन आरोपों के बारे में कुछ पता न था। यहां तक कि जब मैंने अपनी बीमारी से शिफा पाई और कमज़ोरी की अवस्था में थी और में मैं उम्मे मस्तह मनाफए की तरफ गई। जो पाख़ाना जाने का स्थान था। हम रात को ही निकला करते थे और यह उस समय से पहले की बात थी जब हमने अपने घरों, घरों के निकट शौचालय बनवाए थे। उस समय में लोग पाख़ाना के लिए बाहर जाते थे, और औरतें रात को जब अंधेरा फैल जाए बाहर निकला करती थीं। कहती हैं कि इससे पहले, हमारी स्थिति गांव वालों की तरह से थी जो जंगल में या बाहर जाकर पाख़ाना किया करते थे। मैं और उम्मे मस्तह बिन अबी रुहम दोनों जा रही थीं कि इतने में वह अपनी चादर से अटकी और ठोकर खा गईं। तब उसने कहा कि मस्तह बदनसीब हो। मैंने उस से कहा कि क्या बुरी बात की है तुम ने। क्या तू उस आदमी को बुरा कह रही है जो जंग बदर में मौजूद था। उसने कहा अरे भोली भाली लड़की! क्या तुम ने नहीं सुना कि जो लोगों ने झूठ बांधा है? तब उन्होंने मुझे बताया कि यह आरोप आप पर लगाया गया है। कहता हैं, मैं बीमारी से अभी उठी ही थी कमज़ोरी अभी थी ही। यह बात सुनकर मेरी बीमारी बढ़ गई।

जब अपने घर लौटी तो अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास आए। आपने अस्सलामो अलैकुम कहा और आप ने पूछा कि अब तुम कैसी हो? मैंने कहा: मुझे मेरे माता-पिता के पास जाने की अनुमति दें। कहती हैं कि मैं उस समय मैं उनके पास जाना चाहती था ताकि आरोप लगाने वालों के बारे में पूछ सकूं अर्थात जो यह दोष लगा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे इस बात की आज्ञा दे दी। मैं अपने माता-पिता के पास आई तो मैंने अपनी माँ से पूछा कि लोग क्या बातें कर रहे हैं। मेरी माँ ने कहा कि बेटी इस बात से अपनी जान

को व्यर्थ कष्ट में न डालो। परेशान मत हो सुनिश्चित रहो। अल्लाह की कसम! कम ही इस प्रकार हुआ है कि किसी आदमी के पास सुन्दर औरत हो उस की बीवी हो जिस से वह मुहब्बत भी रखे और उस की सौतनें भी हों और फिर लोग उसके ख़िलाफ बातें न करें। हज़रत आयशा कहती हैं। मैंने कहा कि सुब्हनल्लाह। लोग इस तरह की बातों की चर्चा कर रहे हैं। फिर कहती हैं कि मैंने वह तरह रात इस तरह से काटी कि सुब्ह तक मेरे आंसू नहीं थमे। इतना बड़ा दोष मुझ पर लगाया है। मुझे पूरी रात नींद नहीं आई और मैं रोती रही।

जब सुबह उठी, तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अली बिन अबी तालिब और ओसामा बिन ज़ैद को बुलाया। उस समय जब वह्य के आने में देर हुई ताकि इन दोनों से अपनी बीवी को छोड़ने के बारे में मशवरा करें। अर्थात यह फैसला कि इस तरह जो आरोप लगाया गया है इस के बाद उन को रखूं या नहीं? उसामा ने आप को उस प्रेम के कारण सलाह दी, जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आप की पत्नियों से थी। ओसामा ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! आप की पत्नी हैं और अल्लाह की कसम ! हम सिवाय भलाई कि और कुछ नहीं जानते। हमने तो कोई दोष नहीं देखा है। हज़रत आयशा कहती हैं, लेकिन अली इब्न अबी तालिब ने कहा, अल्लाह के रसूल! अल्लाह तआला ने आप पर कोई तंगी नहीं रखी इसलिए उन्होंने यह परामर्श दिया कि आप पर तंग नहीं रखी और अन्य औरतें भी हैं। हज़रत अली ने यह कहा कि उस सेविका से पूछें। जो हज़रत आयशा की सेविका थीं। उन से पूछें कि वह कैसी हैं? (वह आप से सच-सच कह देगी)। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बरीरा को बुलाया। वह एक सेविका थी और आपने कहा बरीरः! क्या तुम ने उस में अर्थात हज़रत आयशा में कोई इस तरह की बात देखी है जो तुम्हें संदेह में डालती है? बरीरा ने कहा कि बिल्कुल नहीं। उस हस्ती की कसम है! जिसने आपको इस सच्चाई के साथ भेजा कि मैंने आयशा में और कुछ नहीं देखा, जिस को मैं उन के लिए बुरा समझूं कि वह कम आयु एक छोटी लड़की है। अर्थात आटा छोड़ कर सो जाती है। कुछ लापरवाही है और इतनी गहरी नींद उन्हें आती है कि घर की बकरी आती है और उसे खा जाती है। उन का यह एक उदाहरण देकर बताया कि कोई बुराई तो नहीं है लेकिन यह कमज़ोरी है। नींद आती है। यह सुन कर उसी दिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को संबोधित किया और अब्दुल्ला बिन अबी बिन सुलुल की शिकायत की क्योंकि उसी ने प्रसिद्ध था। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उस आदमी को कौन संभाले जिस ने मेरी बीवी के बारे में मुझे दु:ख दिया है। मैं अल्लाह की कसम खाता हूं कि मुझे अपनी पत्नी में नेकी के अतिरिक्त कोई भी अच्छाई नहीं पाता, और उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति का उल्लेख किया है जिसके बारे में मुझे भलाई के किसी बात का ज्ञान नहीं है। अर्थात हज़रत आयाशा के बारे में जिस पर आरोप लगाया है और मेरे घर वालों के पास जब भी वह आया करते थे तो वह मेरे साथ आते थे। इस पर हज़रत सअद बिन मुआज़ खड़े हुए और कहा हे अल्लाह के रसूल! अल्लाह की कसम मैं उस से आप की बदला लूंगा। जिस ने यह आरोप लगाया है। अगर वह औस का हुआ तो मैं उस की गर्दन उड़ा दूंगा। यदि वह हमारे भाइयों ख़ज़रज की ओर हुआ तो जो भी आप हमें आज्ञा देंगे, हम आपका आदेश मानेंगे। साद बिन उबादा खड़ा हुए और वह ख़ज़रज कबीला के सरदार थे और इससे पहले कि वह एक अच्छे आदमी था, लेकिन क़ौमी सम्मान ने उन्हें भड़का दिया, और उन्होंने कहा, आपने ग़लत कहा। अल्लाह तआला की कसम! आप इसे नहीं मारेंगे और आप इसे करने में सक्षम नहीं हैं। चर्चा शुरू हुई। इस पर उसैर बिन हुफैर खड़े हो गए। तीसरा व्यक्ति खड़ा हुआ और कहा कि आपने गलत कहा है। अल्लाह की कसम! अल्लाह की कसम! हम निश्चित रूप से उसे मारेंगे जिसने भी आरोप लगाया है। फिर यहां तक कहा कि तू तो मुनाफिक़ है जो मुनाफिकों की तरह झगड़ा करता है। इस पर दोनों क़बीले औस और ख़ज़रज भड़क उठे। आपस में ग़ुस्सा में आ गए। यहां तक कि लड़ाई शुरू हो गई। शुरू तो नहीं हुई थी, लेकिन लड़ने के क़रीब थे, कहते हैं कि वे लड़ने के लिए तैयार थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिन्बर पर खड़े थे, आप उतेर और उन्हें ठंडा किया यहां तक कि वह ख़ामोश हो गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी चुप रहे।

हज़रत आयशा कहती हैं यह रिवायत चल रही है। बुखारी की एक लंबी रिवायत है कि मैं पूरा दिन रोती रही। न मेरे आंसू नहीं थमते और न मुझे नींद आती। मेरे माता-पिता मेरे पास आ गए। मैं दो रातों और एक दिन इतना रोई कि मैं समझी कि यह रोना मेरे जिगर को छेद देगा। मैं खत्म हो जाऊंगी। कहती थीं कि इसी समय वे दोनों मेरे समीप बैठे हुए थे, अर्थात्, माता-पिता बैठे थे और वे चिंतित थे कि इस समय एक अंसारी महिला ने अन्दर आने की आज्ञा चाही। मैंने उसे आज्ञा दे दी। वह बैठ गई और मेरे साथ भी रोने लगी। हम उसी हालत में थे कि अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह के घर में आकर बैठ गए। और जिस दिन से मेरे पर आरोप लगाया गया था आप मेरे पास नहीं बैठे थे। दूर से हाल चाल पूछ कर चले जाते थे, या काम करने वाली से हालचाल पूछ कर चले जाते थे। और जब घर आ गई हैं तो वहां पूछते थे बहरहाल उस दिन आए और कहती हैं कि मेरे पास आकर बैठे। और आप एक महीने तक प्रतीक्षा करते रहे. मगर मेरे बारे में आप को कोई वह्य न हुई। जिस दिन यह आरोप लगा था उस दिन प्राप्य एक महीना गुज़र चुका था आर आप मेरे पास बैठ नहीं थे लेकिन उस दिन आकर बैठ गए और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस इन्तेज़ार में थे कि अल्लाह तआला कुछ बता देगा। हज़रत आयशा कहती हैं कि आप ने तशह्हुद पढ़ा और फिर आप ने फरमाया है आयशा मुझे तुम्हारे बारे में यह बात पहुंची है। पहली बार, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह से कहा। इसलिए अगर तुम बरी हो तो अल्लाह तआला तुम्हें ज़रूर बरी करेगा, और अगर तुम में से कोई भी कमज़ोरी हो गई है, तो अल्लाह तआला से माफी मांगो और उससे पश्चाताप करो, क्योंकि बन्दा जब अपने गुनाह को स्वीकार करता है और फिर पश्चाताप करता है तो अल्लाह तआला भी उस पर रहम करता है। कहती हैं जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बात समाप्त कर ली तो पहले चूंकि मैं बहुत रो रही था, मेरे आंसू सूख गए। यहाँ तक कि आँसुओं की एक बूँद भी महसूस नहीं हुई।

मैंने अपने पिता से कहा। उस समय, हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह ने हज़रत अबू बकर से कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मेरी तरफ से उत्तर दीजिए। उन्होंने कहा, "मुझे नहीं पता कि मैं रसूलुल्लाह से क्या कहूं। क्या बात करनी है क्या जवाब दूं। मैं यही जवाब देना चाहती हूंगी न कि मेरे बरी होने का जवाब दें। फिर मैंने अपनी माँ से कहा। आप ही अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कुछ उन्होंने कहा है, मेरी तरफ से उसका जवाब दो। उन्होंने कहा, मैं नहीं जानती कि मैं अल्लाह तआला के रसूल से क्या कहूं। हज़रत आयशा कहती थीं कि मैं एक छोटी आयु की बच्ची थी। मुझे उस समय कुरआन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। फिर भी, मैंने उसी समय कहा कि मुझे पता चला है कि आपने सुना है कि लोग क्या बातचीत करते हैं। अर्थात यह जो मुझ पर बड़ी गन्दा आरोप लगाया गया है, वह बात आप के दिल में बैठ गई है। और आपने इसे सही समझा है। बल्कि, यह कहती हैं कि मैंने कहा कि आप ने शायद समझ लिया है कि यह सही है। और अगर मैं आपके पास किसी बात को स्वीकार कर लूं हालांकि अल्लाह तआला जानता है कि मैं बरी हूं। और मैंने इस तरह की कोई ग़लत हरकत नहीं की तो आप इस कहने पर मुझे सच्चा समझ लेंगे। अगर स्वीकार कर लूं तो आप मुझे सच्चा समझ लेंगे कि हां शायद यह बात सच ही होगी। कहती हैं कि अल्लाह तआला की कसम! मुझे यूसुफ के पिता के अलावा अपना और आप का कोई उदाहरण नहीं मिला। उन्होंने कहा कि धैर्य करना ही अच्छा है और अल्लाह से ही मदद मांगनी चाहिए। हज़रत याकूब ने हज़रत यूसुफ के भाइयों से जो कहा था कि अल्लाह ही से इस बात में मदद मांगनी चाहिए। जो तुम लोग वर्णन कर रहे हो। कहती हैं मैंने यह आयत पढ़ दी। उसके बाद मैं एक तरफ हट कर अपने बिस्तर पर आ गई और मुझे उम्मीद थी कि अल्लाह मुझे बरी करेगा। वह जानती थीं कि मैं निर्दोष हूं, अल्लाह तआला मुझे बरी करेगा। लेकिन कहती हैं कि अल्लाह की कसम मुझे अपने बारे में कोई धारणा नहीं थी कि अल्लाह तआला मेरे बारे में कोई वह्य नाज़िल करेगा। यह तो विचार था कि अल्लाह तआला मुझे बरी कर देगा लेकिन यह विचार नहीं था कि इस सीमा तक यहां तक हो जाएगा कि अल्लाह तआला मेरे बरी होने के बारे में वह्य नाज़िल करेगा। बल्कि मैं अपने विचार में इस से बहुत नीचे थी कि मेरे बारे में कुरआन करीम में वर्णन किया जाए। मैं अपने आप को इस योग्य नहीं समझती थी कि अल्लाह तआला मेरे बारे में कोई वह्य करे बल्कि मुझे आशा थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नींद में कोई सपना देख लें कि अल्लाह तआला ने मुझे बरी किया है। हज़रत आयशा कहती हैं कि अल्लाह तआला की कसम! आप अभी तक बैठने की जगह से अलग नहीं हुए थे, और न घर के लोगों में से कोई

भी बाहर गया था कि इतने में आप पर वह्य नाज़िल हुई और वह्य के दौरान जो आपको तकलीफ होती थी वह आप को होने लगी। आप को इतना पसीना आया था कि सर्दी के दिन में भी पसीना आप से मोतियों की तरह टपकता था।

जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वह्य की अवस्था जाती रही। तो आप मुस्कुरा रहे थे और पहली बात जो आप ने फरमाई आयशा अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा बरी होना बता दिया है । कहती हैं इस पर मेरी मा ने मुझे कहा कि उठो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाए मैंने कहा अल्लाह का कसम हरगिज़ नहीं मैं उन के पास उठ कर हरगिज़ नहीं जाऊंगी और अल्लाह के सिवा किसी की शुक्रिया अदा नहीं करोंगी। अल्लाह तआला ने यह वह्य की थी वे लोग अर्थात जिन्होंने आरोप लगाया था वे तुम में से ही एक जत्था था जब अल्लाह तआला ने मेरे बरी होने के बारे में यह वह्य नाज़िल की तो अबू बकर ने कहा कि वह मिस्ताह बिन उसासा को उन के निकटवर्ती होने के कारण खर्च दिया करते थे अल्लाह की कसम जो मिस्ताह ने आयशा पर आरोप लगाया है मैं इस को बाद उस को कोई खर्च नहीं दूंगा। मगर अल्लाह तआला ने फरमाया अर्थात सूरह नूर की वह आयत नाज़िल हुई जिस में अल्लाह तआला फरमाता है यह आयत मैं ने पढ़ दी है। और इस का अनुवाद भी पढ़ दिया है। इस का अनुवाद यह है कि तुम में से फज़ीलत वाले और सामर्थ्य वाले मिस्कीनों तथा अल्लाह तआला की राह में हिजरत करने वालों को कुछ न देने की कसम न खाएं। अत: चाहिए कि वह माफ करें और क्षमा करें। क्या तुम यह पसन्द नहीं करते कि अल्लाह क्षमा करे और अल्लाह बहुत अधिक क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है। हज़रत अबू बकर कहने लगे अल्लाह कि कसम ज़रूर चाहता हूं कि अल्लाह तआला मेरे गुनाह क्षमा कर दे और छुपाते हुए मुझे क्षमा कर दे। मिस्ताह को जो ख़ुराक वह दिया करते थे वह फिर मिलने लगी।

और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हजरत ज़ैनब बिन जहश से मेरे मामले के बारे में पूछा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "ज़ैनब! तुम क्या समझती हो जो तुम ने देखा है? वह कहती हैं कि हे अल्लाह के रसूल मैं अपने सुनने को तथा देखने को सुरक्षित रखूंगी। मैं तो आयशा को (अर्थात कि मैं ऐसा कभी नहीं कह सकता) पवित्र ही समझा है। अपने कानों को और आंखों को मैं सुरक्षित समझती हूं और हमेशा सुरक्षित रखूंगी। मैं ग़लत बातें नहीं कह सकती। मैंने तो आयशा को हमेशा पवित्र ही देखा है और पवित्र ही देखूंगी। हज़रत आयशा कहती थीं कि यही ज़ैनब वह थीं जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों में से मेरी बराबरी किया करती थी। अल्लाह तआला ने उन्हें पवित्रता के कारण बचाए रखा और उनकी बहन हुमना बिन जहश उनकी बात को सच कह रही थीं और मारे गए जिन लोगों ने आरोप लगाया था अर्थात उन लोगों के साथ थी जिन्होंने आरोप लगाया था और हलाक हो गई ।

(उद्धरित सहीह अल्बुख़ारी किताबुश्शहादत, हदीस 2661, भाग 4, पृष्ठ 721 से 731, प्रकाशक नज़ारत इशाअत रब्वा। (उद्धरित सहीह अल बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीसुल इफक हदीस 4141, भाग 8 पृष्ठ 325 प्रकाशक नज़ारत इशाअत रब्वा)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस घटना का वर्णन सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में किया है, जिसका उल्लेख मैं बुखारी के बारे में पहले कर चुका हूँ। इसके बारे में और उन्होंने जो लिखा है, वह यह है कि जब यह कहती हैं कि इन सहाबी ने इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन पढ़ा, तो मैं जाग गई, तो मैंने देखते ही अपनी मुंह झट अपनी उढ़नी से अपना चेहरा ढक लिया, क्योंकि पर्दे का आदेश जारी हो चुका था और ख़ुदा की कसम! उसने मेरे साथ कोई बात नहीं की। उन्होंने बात भी कोई नहीं की और न मैंने इस बात के सिवा उन के मुंह से कोई बात नहीं सुनी अर्थात् इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। इस के बाद वह अपने ऊँट को आगे लाया और मेरे निकट बिठा दिया और उस ने ऊंठ के दोनों घुटनों पर अपना हाथ रख दिया। ताकि वह अचानक न उठ सके। अत: मैं ऊंट के ऊपर चढ़ गई ।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 563)

वहां बुखारी में यह था कि उनके हाथ पर पैर रख कर चढ़ीं यहां यह है कि उन्होंने ऊंट के घुटनों पर पैर भी रख दिया ताकि ऊंट अचानक न उठे। जैसा कि हज़रत आयशा ने कहा है कि मेरे बारे में ख़ुदा तआला की वह्य मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी। हज़रत आयशा कहती हैं कि मेरे लिए, यह वह्य महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी।

बहरहाल, यह एक महत्त्वपूर्ण घटना थी और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर वालों पर बहुत बड़ा आरोप लगाया गया था। हज़रत आयशा का एक विशेष स्थान था और यह स्थान इस कारण से था कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि वह्य भी मुझे सब से अधिक आयशा के कमरे में होती है और सूरह नूर में इन आरोप लगाने वालों का क्या अंजाम होना चाहिए एस बारे में बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है कि क्या होना चाहिए। इस बारे में दस ग्यारह आयतें हैं। बहरहाल हज़रत आयशा ने जिस आयत का हवाला दिया है इस की तफसीर वर्णन करते हुए इस घटना के हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद ने जो अधिक बातें वर्णन फरमाई हैं वे बयान करता हूं. पहले तो आयत पढ़ दूं।

اِنَّ الَّذِیۡنَ جَآءُوۡ بِالۡاِفۡکِ عُصۡبَۃٌ مِّنۡکُمۡ ؕ لَا تَحۡسَبُوۡہُ شَرًّا لَّکُمۡ ؕ بَلۡ ہُوَ خَیۡرٌ لَّکُمۡ ؕ لِکُلِّ امۡرِیًٔ مِّنۡہُمۡ مَّا اکۡتَسَبَ مِنَ الۡاِثۡمِ ۚ وَ الَّذِیۡ تَوَلّٰی کِبۡرَہٗ مِنۡہُمۡ لَہٗ عَذَابٌ عَظِیۡمٌ

(अन्नूर 12) वास्तव में, वे लोग जो झूठ बना लाए इसी मैं से एक गिरोह है। इस मामले को अपने पक्ष में बुरा न समझो, बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उनमें से प्रत्येक के लिए, जिसने जो गुनाह किया है, जब कि उस में से वे अधिकतर के ज़िम्मेदार हैं उन के लिए बड़ा अज़ाब है।

इसके आगे और अन्य आयतें भी हैं। बहरहाल इस आयत के विस्तार में जो सारी घटना वर्णन हुई है। फिर आपने लिखा है कि जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना पहुंचे, तो अब्दुल्ला बिन अबी बिन सुलुल और उनके साथियों ने यह प्रसिद्ध कर दिया कि हज़रत आयशा नऊज़ बिल्लाह जान बूझ कर पीछे रह रही थीं। और उन को सफवान से सम्बन्ध था जो बाद में ऊंठ लेकर आए। लिखते हैं कि यह शोर इतना बढ़ गया कि कुछ सहाबी भी अनजान रूप में इस में शामिल हो गए थे, जिनमें से एक हस्सान बिन साबित हैं। और दूसरे मिस्ताह बिन उसासा। इसी तरह साबिया हमना बिन्त जहश भी थी जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साली थीं हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह तआला को इस घटना से बहुत दु:ख पहुंचा था और छोटी आयु में एक इस तरह के जंगल में अकेली रह गई थीं जो बहुत अधिक सुनसान था और मदीना पहुंच कर इस सदमा से बीमार हो गईं। तंहाई को जो एक डर था हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने लिखा है कि यह भी बीमारी का एक कारण था। इधर इन के बारे में मुनाफिकों में ख़िचडी पकती रही। अन्त में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ये बातें पहुंच गईं। आप हज़रत आयशा की बीमारी को देख कर उन से पूछ नहीं सकते थे। पूछा भी नहीं कि मुनाफेकीन क्या बातें कर रहे हैं इधर दिन प्रति दिन बातें अधिक होती गईं। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह यह देख कर हैरान होतीं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर पर तशरीफ लाते थे, तो आप के चेहरा उतरा हुआ होता था और मुझ से मुझ से बात नहीं करते थे। कहती हैं बहुत परेशान चेहरा था, और दूसरों से मेरा हाल पूछ कर चले जाते थे। कहती हैं, मैं आपकी अनुमति

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

से एक दिन अपने माता-पिता के पास गई, और फिर वही पाख़ाना जाने वाली घटना घटी। जो रिश्तेदार थे, उनके साथ बाहर जाती थीं, उसने अपने बेटे मिस्ताहा कानाम लेकर कहा कि उस का बुरा हो। हज़रत आयशा ने इस पर कहा कि इस तरह से क्यों कहती हो? उन्होंने कहा इस तरह क्यों न कहूं । तुम्हें पता नहीं कि वह तो इस प्रकार की बातें कह रहा है। तो हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि वह औरत कोई अवसर निकालना चाहती थी कि बात करे। हज़रत आयशा को बताए कि आप पर क्या आरोप लग रहे हैं क्योंकि वह नहीं जानती थीं। जब हज़रत आयशा ने यह सुना, तो उन को बहुत सदमा हुआ। वापस आ गईं और जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, मुझ को बहुत कमजोरी हो गई । जैसे-जैसे आप घर पहुंची परन्तु इस का नतीजा यह हुआ कि बीमारी फिर से तेज़ हो गई।

बहरहाल आप आगे घटना वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर, हज़रत अली और हज़रत ओसामा बिन ज़ैद से बुला कर सलाह की कि क्या किया जाना चाहिए। हज़रत उमर और ओसामा बिन ज़ैद दोनों ने कहा कि यह मुनाफिको की फैलाई हुई बात है, लेकिन हज़रत अली का स्वभाव कुछ तेज़ था। उन्होंने कहा कि बात कुछ है भी या नहीं। आपको उस महिला के साथ संबंध बनाने की क्या आवश्यकता है जिस पर आरोप लग चुका है, लेकिन साथ यह भी कहा जैसा कि वर्णन हो चुका है कि आप उन की दासी से पूछें। अगर कोई बात हुई तो वह बता देगी। अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा की दासी बरीर: से पूछा कि क्या तुम को आयशा की कोई ग़लती मालूम है? उन्होंने कहा, आयशा का सिवाए इस के कोई बुराई नहीं कि छोटी आयु की होने के कारण उसे नींद जल्दी आती है और फिर गहरी नींद आती है और वही घटना वर्णन की। बहरहाल कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर आए। सहाबा को एक स्थान पर इकट्ठा किया और फिर कहा कि कोई है जो मुझे उस व्यक्ति से बचाए जिसने मुझे दु:ख पहुंचाया है। इसका मतलब आप का अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सुलुल था, कि उस ने दु:ख दिया था । हज़रत साद बिन मुआज़ अपने कबीला के सरदार थे और उन्होंने कहा, "अल्लाह के रसूल!" अगर वह व्यक्ति हम में से है तो हम उसे मारने के लिए तैयार हैं। और अगर वह ख़ज़रज का है, तो वह उसे मारने के लिए तैयार हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि शैतान हर समय उपद्रव फैलाना के लिए एक अवसर की तलाश में रहता है, यहां तक कि शैतान ने भी इस अवसर को नहीं छोड़ा। ख़ज़रद को एहसास नहीं हुआ कि अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात से कितना सदमा पहुँचा है। जब साद बिन मुआज़ ने यह बात की, तो दूसरे कबीला को क्रोध आ गया। तो सअद बिन अबादा खड़े हुए और उन्होंने साद बिन मुआज़ से कहा, "तुम हमारे आदमी को नहीं मार सकते और न आपकी ताकत है कि इस तरह से कर सको।" इस बातचीत में दूसरे सहाबी भी उठे और उन्होंने कहा कि हम उसे मार देंगे और देखेंगे कि कौन उसे बचाता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि इसके बजाय कि मुकाबला बातों तक रहता, औस तथा खज़रज ने मियानों से तलवारें निकाल लीं नियमित युद्ध शुरू होने लगा। अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें बहुत मुश्किल से ठण्डा किया। औस कहते थे कि जिस व्यक्ति ने अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दु:ख पहुंचाया है, हम उसे मार देंगे और ख़ज़रज कहते थे कि तुम यह बात ईमानदारी के साथ कहते। क्योंकि तुम जानते हो कि वह हम में से एक है, इसीलिए यह बात करते हो। बहरहाल यह बात भी प्रमाणित है कि उन दोनों को अल्लाह तआला के रसूल से भी प्यार था। परन्तु शैतान ने उन में फित्ना फैला दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि इस स्थिति के बारे में हर व्यक्ति आसानी से समझ सकता है कि क्या दर्दनाक स्थिति होगी। इधर अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतना कष्ट पहुँचा, और उधर मुसलमानों में तलवार चलने तक की अवस्था पहुच गई। तो शैतान कभी-कभी नेकों में भी यह स्थिति कर देता है।

बहरहाल फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद वही घटना वर्णन करते हैं जो हज़रत आयशा ने वर्णन किया है कि जब हज़रत आयशा से सारी घटना के बारे में पूछा गया तो आप ने कहा, "अगर मैं मानती हूं, तो मैं झूठ स्वीकार करूंगी। अगर अपने आप को बरी साबित करती हूं तो आप लोग यकीन नहीं करेंग। इसी समय, मैं वही कहती हूं, जो हज़रत यूसुफ के पिता हज़रत याक़ूब ने कहा कि

فَصَبۡرٌ جَمِیۡلٌ وَاللّٰہُ الۡمُسۡتَعَانُ

(यूसुफ 19) कि मेरे लिए अच्छी तरह से धैर्य करना ही उत्तम है, और इस बात के लिए अल्लाह तआला से ही मदद मांगी जा सकती है और मांगी जाती है। वर्णन किया जाता है कि हज़रत आयशा ने यह कहा वहां से उठ कर मैं अपने बिस्तर पर आ गई। इस पर फिर यह आयत नाज़िल हुई तो मैंने अभी पहले पढ़ी है कि जिन्होंने ख़तरनाक झूठ बोला है, वह तुम्हीं में से एक गिरोह है लेकिन तुम इन के आरोप को अपने लिए ख़राबी का कारण न मानो, बल्कि इसे एक भलाई का कारण समझो क्योंकि इस आरोप के कारण झूठा आरोप लगाने वालों की सज़ा का वर्णन हो गया। और तुम्हें एक हिक्मत वाली शिक्षा प्राप्त हो गई। और निसन्देह उन में से प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने गुनाह की सज़ा पाएगा और जो व्यक्ति इस गुनाह को बड़ा हिस्सा का ज़िम्मेदार है उस बहुत बड़ी सज़ा मिलेगी। बहरहाल इस वह्य के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा चमक उठा था, और उस समय, हज़रत आयशा कहती है, "मेरी माँ ने मुझे कहा, 'अल्लाह तआला की प्रशंसा करो, तो मैंने यही कहा,' मैं तो अल्लाह तआला का धन्यवाद अदा करूंगी ।

(उद्धरित तफसीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 269 से 271)

बहरहाल जैसा कि पहले बताया गया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने भी एक ख़ुत्बा में एक उपदेश में उल्लेख किया है कि हज़रत आयशा पर आरोप लगाने के कारण तीन लोगों को कोड़े लगे थे, जिन में से एक हस्सान बिन साबित थे, जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शायर था। एक मिस्तह था जो हज़रत आयशा के चचेरे और हज़रत अबू बक्र ख़ालाज़ाद भाई थे, और वह इतना ग़रीब आदमी था कि जो हज़रत अबू बकर के घर में ही रहता था। वहीं खाना काता था। आप ही उनके लिए कपड़े बनवाते थे और एक महिला थीं। तीनों को दंडित किया गया।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 18 पृष्ठ 279-280)

और इस घटना का सुन्न अबी दाऊद में भी उल्लेख है। (सुन्नत अबू दाऊद किताबुल हुदूद हदीस 4474-4475) बहरहाल यह कुछ के निकट यह सज़ा हुई। कुछ के निकट नहीं हुई। (तफसीर अल्कुरतबी, जिल्द 15 पृष्ठ 169 सूरत अन्नूर मौअस्स अर्रिसाला बैरूत 2006 ई) लेकिन यह जो सहाबा थे उन्हें सज़ा हुई या नहीं अल्लाह तआला ने उन को माफ कर दिया जो दुनिया की सज़ा थी वह मिलनी थी और वह मिल गई और बाद की जंगों में जैसा कि मैंने बताया है यह शामिल हुए। और यह मिस्तह एक बदरी सहाबी थे। उन का एक बहुत बड़ा स्थान था। अल्लाह तआला ने उन का अन्त अच्छा किया और उस स्थान को क़ायम रखा तथा क़ायम फरमाया। अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचा करता चला जाए।

(अल्फ़ज़ इंटरनेशनल 04/10 / जनवरी 2019 पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

दुआ इलाज है

गुनाह करने वाला अपने गुनाहों की बहुत ज्यादा अधिकता का विचार करके दुआ से हरगिज़ रुक ना जाए। दुआ इलाज है। अंत दुआओं से देख लेगा कि गुनाह इसे कैसे बुरे लगने लगा। जो लोग गुनाहों में डूब कर दुआ की कबूलियत से निराश रहते हैं और तौब: की तरफ ध्यान नहीं करते अन्त में वे नबियों और उनके प्रभावों के इन्कार करने वाले हो जाते हैं।

तौब: बैअत का अंश है।

यह तौब: की वास्तविकता है जो ऊपर वर्णन की गई और यह बैअत का अंश क्यों है? जब वह बैअत करता है और इस तरह के हाथ पर जिसे अल्लाह तआला ने वह परिवर्तन प्रदान किया हो, तो जैसे एक वृक्ष में कलम लगाने से गुण बदल जाते हैं। इसी तरह से इस पैवन्द (कलम लगाने) से उस में वह विशेषता बदल जाती है। इसी तरह से इस कलम लगाने से भी उस में फैज़ तथा नूर आने लगते हैं (जो उस तब्दील हुए इंसान में होते हैं) बशर्ते कि उसके साथ सच्चा संबंध हो। शुष्क शाखा की तरह न हो उसकी शाखा होकर पैबन्द हो जाए। जितना अधिक यह तुलना होगी उतना अधिक लाभ होगा

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

“अल्लाह तआला का बुला लेना भी तो एक फज़्ल है।”

*** ... “मेरी इच्छा तो केवल यह है कि जो काम समय के ख़लीफा ने मेरे ज़िम्मे सौंपा है मैं उसे अल्लाह तआला की मदद से पूरा कर दूं।”**

*** ... “ मानव के प्रयास और कोशिश कुछ भी नहीं होती यह मेरे जीवन का सारांश है। जो कुछ है अल्लाह तआला का फज़्ल है और उसके बाद ख़िलाफत से सम्बन्ध है।”**

हज़रत अक़दस मुहम्म्द मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़, हदीस के माहिर, ख़िलाफत के इश्क तथा सम्मान से भरे हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला के सब से बड़े पौते, और हज़रत नवाब मुबारका बेगम और नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब के नवासे, हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस के बड़े बेटे , अमीरुल मोमिनीन हज़रत ख़ीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के ममेरे भाई, अपने जीवन में ही अल्लाह तआला से क्षमा और दया की ख़बर पाने वाले,

वाक्फे ज़िन्दगी के रूप में, आधी शताब्दी से अधिक और अन्तिम सांस तक सिलसिला अहमदिया की सेवा करने वाले,बहुत अधिक परिश्रम करने वाले, आलिम बा-अमल, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की किताबों के अंग्रेज़ी अनुवादक,

साहिबज़ादा मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब, वकीलुल इशाअत तहरीक जदीद अन्जुमन अहमदिया की वफात पर उन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 दिसम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मेरा इरादा था कि कुछ सहाबा का ज़िक्र करूंगा और उसके बाद, मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब , जिनकी पिछले दिनों वफात हो गई है, उन का उल्लेख करूंगा, लेकिन उन के बारे में जो बहुत सारे पत्र मुझे मिले उन की बातें लिखीं इस के कारण मैं ने समझा कि उन्हीं का वर्णन आज करूंगा।

मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब , जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के बड़े बेटे थे उन की पिछले दिनों कब्वा में 81 साल की उम्र में वफात हुई है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। यह हज़रत मुस्लेह मौऊद के सब से बड़े पोते थे और हज़रत नवाब मुबारक बेगम साहिबा और नवाब मुहम्मद अली खान के नवासे थे। इस लिहाज़ से यह ममेरे भाई भी थे। उन्होंने कादियान में प्रारंभिक शिक्षा पूरी की, फिर रब्वा में पूरी की। फिर पंजाब यूनिवर्सिटी से एम ए पास किया। फिर कुछ समय वहां कॉलेज सेवा की और फिर इंग्लैंड में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की। यहां से उन्होंने एम.ए किया। ख़ुदा के फज़्ल से, उन्होंने 1955 ई में वक्फ ज़िन्दगी किया और 1962 ई में व्यावहारिक जीवन में कदम रखा, और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी मेहनत से काम किया। बहुत शौक से, कड़ी मेहनत और परिश्रम से मेहनत करने के आदी थे। हदीस, दर्शन और अंग्रेज़ी साहित्य में उनका गहरा अध्ययन था। हदीस से विशेष सम्बन्ध था, और इसलिए आरंम्भिक शिक्षा आदरणीय मौलवी ख़ुर्शीद अहमद साहिब, मरहूम से प्राप्त की थी। अपने घर में उन का एक बड़ी पुस्तकालय भी था। जहां बड़ी दुर्लभ पुस्तकें रखते थे। पढ़ने का बहुत शौक था। यदि कोई छात्र किसी क्षेत्र में मार्गदर्शन करने के लिए आता था, तो बहुत अच्छी जानकारी दिया करते थे। उनके पास हदीस की प्रमुख तथा बुनियादी स्रोतों की पुस्तकों का सेट भी था, और उन्होंने इसे विभिन्न लायब्रेरी से एकत्र किया था।

जब उन्होंने 1955 ई में वक्फ ज़िन्दगी किया और ख़ुद को प्रस्तुत किया, उस समय, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने उन का वर्णन किया और फरमाया, मैंने जमाअत में जो वक्फ की तहरीक शुरू की है उसके बाद मेरे पास तीन आवेदन आए हैं, एक तो मेरे पोते मिर्ज़ा अनस अहमद की है, जो मिर्ज़ा नासिर अहमद का बेटा है। अल्लाह तआला उसे अपनी नीयत को पूरा करने की तौफीक़ प्रदान करे।” और अनस अहमद साहिब ने लिखा है कि मेरा इरादा था कि मैं क़ानून पढ़ कर अपनी ज़िन्दगी को वक्फ करूं, लेकिन अब आप जहां चाहें मुझे लगा दें मैं हर तरह से तैयार हूं।”

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 36 पृष्ठ 194 ख़ुत्बा जुम्अः 14 अक्टूबर, 1955 ई)

अल्लाह तआला के फज़ल से पिछले 56 वर्षों से विभिन्न जमाअत के पदों पर रहकर सेवा कर रहे थे। प्रारंभिक नियुक्ति में उनकी तालीमुल इस्लाम कॉलेज में व्याख्याता के रूप में हुई थी। फिर 1975 ई में नायब नाज़िर इस्लाह तथा इर्शात नियुक्त हुए। फिर एडीशनल नाज़िर इस्लाह तथा इर्शाद नियुक्त हुए, हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस और हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे के पहले दौरा यूरोप के दौरान हुज़ूर के प्राइवेट सैक्रेटरी भी रहे। उन्हे जामिया अहमदिया के प्रशासक के रूप में कार्य करने का अवसर भी मिला। कुछ साल, यह नाज़िर तालीम भी रहे। नायब नाज़िर दीवान रहे और तहरीक जदीद में, यह अब वकीलुल इशाअत के रूप में काम कर रहे थे। यह पहले वकीलुत्तसनीफ थे, और फिर मार्च 1999 में, वकीलुल इशाअत नियुक्त किए गए और 1997 ई में सेवानिवृत्त हो गए, परन्तु अन्तिम सांस तक आप को सेवा की तौफीक़ प्राप्त हुई। ख़ुद्दामुल अहमदिया, अंसारुल्लाह में भी उन को सेवा की तौफीक़ प्राप्त हुई। ब्राहीन अहमदिया और महमूद की अमीन का अंग्रेज़ी अनुवाद भी उन्होंने किया जो प्रकाशित हो चुका है। आजकल, सुर्मा चश्मः आर्य, इज़ाल्लाह औहाम और दुर्रेसमीन के संशोधित अंग्रेज़ी अनुवाद पर काम कर रहे थे। जब हमारे स्कूलों का राष्ट्रीयकरण किया गया, तो इस के बाद जमाअत ने अपने स्कूल शुरू किए थे जो नासिर फाउंडेशन के अधीन शुरू किए गए थे। मजलिस इफ़्ता के सदस्य भी थे। नूर फाउंडेशन बोर्ड के सदस्य भी थे नूर फाउंडेशन स्थापित की गई थी कि हदीसों की किताबों की तो किताबें हैं उन को जमाअत की तरफ से छपवाया जाए। उन का अनुवाद तथा व्याख्या लिखी जाए। मसन्द अहमद बिन हंबल का उर्दू अनुवाद यह कर रहे थे।

विभाजन के समय, जब क़ादियान से हिजरत हुई, तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने उन के बारे में एक घटना वर्णन की है। यह ऐतिहासिक घटना जो हज़रत मुस्लेह मौऊद की अपनी कुर्बानी थी इस के बारे में है परन्तु इन का वर्णन बीच में आता है इसलिए सुना देता हूं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि जब हम

क़ादियान से आए तो मैंने अपने घर वालों को कह दिया कि तुम्हें लंगर से इतना खाना मिलेगे जितना दूसरों को मिलता है(क्योंकि हालात ख़राब थे इसलिए राशन कम हो रहा था।) फरमाया कि उन दिनों मैंने यह निर्देश दिया हुआ था कि वित्तीय मुशकिलों के कारण प्रति व्यक्ति को केवल एक रोटी दी जाएगी और मैंने अपने परिवार को यह भी बताया कि आपको प्रति व्यक्ति एक रोटी मिलेगी। एक दिन, मेरा पोता, अनस अहमद, मेरे पास रोता हुआ आआ और मुझ से कहा कि एक रोटी से मेरा पेट नहीं भरता। मैंने कहा मैंने तो केवल एक ही रोटी देनी है। यदि तुम्हारा पेट एक रोटी से नहीं भरा है, तो मेरी आधी रोटी इसे दे दिया करो। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने फरमाया कि इस तरह मैं आधी रोटी में गुज़ारा कर लिया करूंगा। और यह डेढ़ रोटी खा लिया करेगा। आप कहते हैं कि जब मेहमानों के लिए रोटी की शर्त उठ जाएगी, तो फिर मैं घर वालों के लिए प्रति रोटी की संख्या भी बढ़ा दूंगा, लेकिन जब तक मेहमानों के लिए एक रोटी की शर्त नहीं उठती, इसे मेरी रोटी का आधा हिस्सा दे दिया करो। आप फरमाते हैं फिर बाद में अल्लाह तआला ने फज़ल कर दिया और न केवल यह कि सिंध की भूमि के उत्पादन में सुधार हुआ है, बल्कि अल्लाह तआला ने भी आय का रास्ता खोला, और फिर प्रतिबंध भी दूर हो गया।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद, भाग 3 पृष्ठ 53, ख़ुत्बा जुम्अः, 3 फरवरी 1956 ई)

उनके दामाद मिर्ज़ा वाहिद अहमद साहिब लिखते हैं कि एक बार मैं अपनी यात्रा पर बुखारा और समरकंद जा रहा था, मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब ने मुझ से कहा कि तुम वहाँ जा रहे हो, इमाम बुख़ारी की क़ब्र पर भी जाओ और दुआ भी करना और सलाम भी करना। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आपकी मुहब्बत के कारण से था कि जिस व्यक्ति ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपदेशों तथा घटनाओं का खज़ाना इकट्ठा कर के हम तक पहुंचाया है, उस का हक है कि इसके लिए दुआ करें और सलाम पहुंचाएं।

डॉ नूरी साहिब लिखते हैं कि मेरा जो कुछ भी उनके साथ अनुभव रहा उन को देखने का अवसर मिला जो काम आप को दिया जाता उसे एक जोश के साथ पूरा करते। बहुत ध्यान और कड़ी मेहनत और समर्पण के साथ, अपने काम को पूरी तरह से करते। कहते हैं कि कमज़ोरी और बीमारी के बावजूद, मैंने आपको लैपटॉप पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की पुस्तकों का अनुवाद करते हुए देखा है। घंटों कंप्यूटर पर टाइप करके और अपने सहाबी कुरआन और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की किताबों के हवाले ले कर आप के पास खड़े होते। आप अक्सर कहते हैं कि मेरी इच्छा केवल इतनी है कि जो काम समय के ख़लीफ़ा ने मुझे सौंपा है मैं अल्लाह तआला की मदद से उसे पूरा कर दूं। नूरी साहिब लिखते हैं कि उनकी स्मृति भी बहुत सराहनीय थी। हदीस और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़ थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़ाओं की घटनाएँ आप इतना भावुक और आत्मीय ढंग से वर्णन करते थे कि सुनने वाले का मन मोह लेते थे, और घटनाएं वर्णन करते समय आप की आंखें भर आती थीं और आवाज़ भरा जाती थी।

धैर्य उन में बहुत ज्यादा था। नूरी साहिब ही लिखते हैं कि आपने हमेशा हर मुश्किल परिस्थिति में धैर्य और साहस दिखाया। हौसले के साथ हर तंगी को सहन किया। अपनी बीमारी के कारण आप एक पीली चाय की भी नहीं उठा सकते थे और न ही बिस्तर से पहलू को बदल सकते थे, लेकिन फिर भी आपने अपना काम जारी रखा और उसे बहुत जिम्मेदारी से अदा किया और कभी भी शिकायत का कोई मौका नहीं दिया। बल्कि अल्लाह तआला की इच्छा पर राज़ी रहे। नूरी साहिब कहते हैं कि हर आने वाले को खुशी से और मुस्कुराते हुए मिलते यह एक महान आचरण था। ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट में प्रवेश करने से एक दिन पहले आप मुझसे मिलने आए। आपका चेहरा बीमारी के कारण बहुत दर्दनाक लग रहा था, इसके बावजूद आप ने मुस्कुराते हुए कहा, कि मेरा अंत निकट है और मैं अपने रब्ब से मिलने जा रहा हूं। यह बात आप ने बड़े मुस्कुराते चेहरे के की।

फिर नूरी साहिब उन की कृतज्ञता के बारे में लिखते हैं कि शुक्र करना और धन्यवाद करने के गुण उनके बहुत थे। कहते हैं दो अवसरों पर आप ने मुझ पर बहुत उपकार करते हुए कहा हैं कि आप ने जिस ईमानदारी के साथ मुझ पर उपकार किया है मेरा ध्यान रखा है मैं इस की क़ीमत अदा नहीं कर पाऊंगा और यह भावना को प्रकट करते समय नुरी साहिब कहते हैं कि उन्होंने मुझे हज़रत ख़लीफ़तुत मसीह सालिस की डायरी दी, जिस पर हुज़ूर ने अपने सपने लिखे थे। इसी तरह, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह को एक कोट भी दिया। इसी तरह, मेडिकल टीम के साथ, दयालुता का व्यवहार किया। उनके कमरे की लाइब्रेरी मैंने भी देखी है। नूरी साहिब ने यह भी लिखा कि सारी दीवारें चारों दीवारों की जो अलमारियां थीं,छत तक उन में पुस्तकें भरी हुई थीं और विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक, आर्थिक और विभिन्न विषयों पर पुस्तकें थीं, जो उन्होंने खुद पढ़ी थीं। ।

मीर दाऊद साहिब मरहूम की बेटी मीर नुदरत कहती हैं कि उनकी मौत का सुन कर बहुत सारी पुरानी यादें मेरे दिल तथा दिमाग़ में आईं और हज़रत ख़लीफतुल मसीह की यादों ताज़ा हो गईं। कहती हैं कि मेरी बेटी की शादी थी, तो प्रबन्ध चेकर करने के लिए समय से पहले मार्की में पहुंच गई तो वहां भाई अनस पहले से बैठे हुए थे। और रो रहे थे। मैं हैरान हुई कि यहां इतनी जल्दी क्यों आ गए हैं तो मुझे देख कर बताया कि आज तुम्हारे पिता जी दाऊद अहमद साहिब मरहूम बहुत याद आ रहे थे तो मैं यहां रह कर तुम्हारे लिए दुआ कर रहा ता।

उन के भांजे आमिर अहमद साहिब लिखते हैं कि ख़ुशी ग़मी में एक मुहब्बत करने वाले बाप की तरह मौजूद रहे। हर घर में ऊंच नीच होती है परन्तु इस तरह माफ कर देते जैसे कुछ हुआ ही नहीं। बल्कि महसूस कर लेते कि मेरी किसी नसीहत के कारण दूसरे को नुकसान तो नहीं पहुंच रहा। तो इस नेक नसीहत के बावजूद अगले दिन ख़ुद उस से माफी मांगते थे।

मुनीरुद्दीन शम्स साहिब एडीशनल वकीलुत्तसनीफ लिखते हैं कि इन के साथ मेरी कई बैठकें होती थीं। हमेशा उन को सहानुभूति करने वाला दयालु पाया। बावजूद इस के कि आयु में मुझ से बहुत बड़े थे कभी उन्होंने न अपनी आयु का और न अपने इल्म का प्रभाव प्रकट किया। मुनीरुद्दीन साहिब कहते हैं कि जब से मियां साहिब के साथ लेखन के काम के बारे में सम्पर्क हुआ तो हमेशा कहा करते थे कि और अधिक काम दें ताकि बीमारी में जितना काम कर सकूं बेहतर है। ख़िलाफत से बहुत अधिक वफा तथा श्रद्धा का सम्बन्ध था और प्राय: जब भी काम के बारे में बात होती तो यही कहते कि मेरा सलाम कहना। और मुझे सलाम भिजवाते थे और हर बार पूछते कि मेरे काम के कारण कोई नाराजगी तो नही। हर समय फिक्र रहती थी कि समय का ख़लीफ़ा कहीं नाराज़ न हो जाए। शम्स का साहिब ही लिखते हैं कि बावजूद बीमारी के जब भी मेरी तरफ से इन्हें कोई काम दिया जाता तो बहुत ख़ुशी के साथ शीघ्र से शीघ्र करने की कोशिश करते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ किताबों का अनुवाद करने के बारे में उन्होंने बहुत प्रशंसा योग्य काम किया है। बराहीन अहमदिया के कुछ भागों को उन्होंने बहुत अच्छा अनुवाद किया है। कहते हैं कि अनुवाद को फाइनल करते हुए हमारी जो टीम थी वह भी उन की राय को सामने रखते थे। जब भी कोई हिदायत दी जाती और मेरी तरफ से जब कोई हिदायत दी जातीं वकालत तस्नीफ उन को देती कि यह समय के ख़लीफ़ा ने कहा है और इस बारे में अपनी राय दें जो बहुत अच्छी राय देते थे। बहरहाल एक आलिम थे और उन का इल्म बहुत गहरा था। इस से जमाअत अब वंचित हो गई अल्लाह तआला और आलिम पैदा करे।

एक गुण प्रत्येक ने लिखा है। बहुत सारे मुबल्लिग़ों ने लिखा है और शम्स साहिब भी कहते हैं कि मुबल्लिग़ीन का बहुत सम्मान करते थे। यह उन का एक बहुत बड़ा गुण था और इल्मी रंग में भी मार्ग दर्शन करते थे।

हाफिज़ मज़फ्फर अहमद साहिब एडीशनल नाज़िर इस्लाह तथा इर्शाद मुक़ामी रब्वा कहते हैं कि मियां साहिब बहुत सारे गुणों के मालिक थे। ख़ुदा तआला से भय, अल्लाह तआला की मुहब्बत, कुर्आन मजीद से इश्क, सादगी अल्लाह तआला पर भरोसा रहम तथा दया आप के बड़े गुण थे। अल्लाह तआला के अधिकारों के साथ अल्लाह तआला के बन्दों के अधिकारों का भी बहुत ध्यान रखते थे। ग़रीबों तथा असहायों का बहुत ध्यान रखते थे। किसी ज़रूरतमंद को ख़ाली हाथ जाने नहीं देते थे। चाहे कर्ज़ लेकर ही क्यों न उस की ज़रूरत पूरी करनी पड़े। हाफिज़ साहिब लिखते हैं कि एक इल्मी आदमी थे। इल्म को प्राप्त करने का बहुत शौक था। और इस के लिए आप ने बहुत मेहनत तथा कोशिश की। हाफिज़ साहिब कहते हैं कि ख़ुद मुझ से उन्होंने वर्णन किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों को अध्ययन का पहला दौर उन्होंने दसवीं की परीक्षा के बाद जो छुट्टियां होती, इस समय कर लिया था। यह बात उन्होंने मुझे भी बताई थी बल्कि एक ख़त में लिखी था कि मैं ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की किताबें पन्द्रह साल की आयु में पढ़ ली थीं । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ थे। हाफिज़ साहिब लिखते हैं और इसी तुलना में हदीस के ज्ञान से भी बहुत ज़ौक तथा लगाव था बल्कि मुहब्बत थी जिस के लिए आप ने अपने ज़ाती अध्ययन से अरबी भाषा में इतनी कुशलता पैदा कर ली थी कि हदीसों के अतिरिक्त इन की अरबी भाषा में व्याख्या भी पढ़ा करते थे। मैट्रिक के बाद, साहिब बुख़ारी आपने हकीम

ख़ुर्शीद साहिब पढ़ी। इस के बाद भी मैंने देखा कि जब आप कॉलेज में लेक्चरर थे, तो सुब्ह कॉलेज जाने से पहले हकीम के घर के सामने इन की कार खड़ी होती थी। वहां हकीम से हदीस पढ़ने के बाद, फिर वह अपने काम पर जाया करते थे। फिर कहते हैं इस के बाद सिहाह सित्ता और अन्य हदीस की पुस्तकों का अध्ययन किया गया और अत तक एक छात्र बने रहे। हदीस की पुस्तकों का एक बहुत अच्छा और अनमोल संग्रह, उन्होंने अपनी लाइब्रेरी में एक बड़ी रक़म से जमा किया, जिस में बहुत उपयोगी दुर्लभ पुस्तकें हैं, और इस दृष्टि में उनकी निजी लाइब्रेरी अनुपमेय है हदीस के ज्ञान से बहुत अधिक लगाव था। कि इस के दूसरे ज्ञान इल्मुल रिजाल और इल्म उसूल हदीस पर भी उपलब्ध किताबें आप के पास थीं। जो उन्होंने जमा कर ली थीं। गहरा अध्ययन करते थे और शैक्षणिक चर्चा में विभिन्न मामलों पर चर्चा करते थे।

सिहाह सित्ता के लिए जब मैंने यहां एक नया बोर्ड स्थापित किया था। नूर फाऊंडेशन स्थापित किया था इस का काम था कि हदीसों का कि जैसा कि मैंने कहा उर्दू में अनुवाद करें, और कुछ की व्याख्या भी लिखें । इस में हाफिज साहिब लिखते हैं कि मियां साहब को भी नियुक्त किया गया था और मियां साहिब ने, हालांकि, अपने निजी कार्यों के, विशेष रूप से अहमद बिन हंबल के उर्दू अनुवाद का सबसे कठिन और लंबा काम अपने ज़िम्मा लिया। और फिर बीमारी तथा अन्य कामों के बावजूद, इसे लगातार जारी रखा और एक भाग का अनुवाद जो सैकड़ों हदीसों पर आधारित है आप ने पूर्ण भी कर लिया। आपकी यह सेवा भी यादगार रहेगी।

फिर हाफ़िज़ लिखते हैं कि आपके हदीस से मुहब्बत का एक ख़ूबसूरत नज़ारा रमज़ान में आपके हदीस के दर्स से होता था। बड़ी व्यवस्था और कड़ी मेहनत के साथ, आप यह दर्स दिया करते थे जो प्राय: आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के विभिन्न विषयों पर होता था। और इस में कीमती मवाद जमा कर के पेश करते थे आवाज़ में बहुत दर्द था इन के दर्स हम रमज़ान में विशेष रूप से सुना करते थे। बहुत सुन्दर अंदाज़ में दर्स दिया करते थे। एक विशेष इश्क़ की भावना और इस तरह दिल को छू लेने वाला दर्स देते थे कि इन्सान कुछ लम्हों के लिए पहली सदियों को ज़माना में चला जाता था।

जलसा सालाना रब्वा में भी आप को कई साल तक़रीरों का अवसर मिला। शमीम परवेज़ साहिब, नायब वकील वक्फ़े नौ लिखते हैं कि उन को ख़िलाफत से मुहब्बत की एक घटना मेरे दिल पर छपी हुई है। जब ख़िलाफ़त राबिया का चुनाव हुआ तो उस समय ख़ाकसार क़ायद ज़िला झंग था और ड्यूटी मुबारक के मेहराब के बाहर थी। जैसे ही अंदर से, हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद रहमतुल्लाह तआला ख़लीफतुल मसीह राबे को ख़लीफ़ा चुने जाने की आवाज़ आई, तो शमीम साहिब कहते हैं मैं ने मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब को देखा कि जून की गर्मी के बावजूद ईंटों के तपते हुए फ़र्श पर अल्लाह तआला के सिज्दा कर गए

डॉ इफ्तिख़ार साहिब लंदन से लिखते हैं कि यह वास्तव में वाक्फ़े ज़िन्दगी थे। कार्यालय आना नहीं छोड़ा सिलसिले की इशाअत तथा अनुवाद के कामों में अन्तिम सांस तक व्यस्त रहे। फिर कहते हैं कि अनुवाद बहुत ध्यान से किया करते थे और उचित मुहावरा तलाश करने में कई कई दिन लगा देते और इताअत का स्तर बहुत ऊंचा था।

ख़ालिद साहब रशियन डेस्क लिखते हैं कि मियां साहिब का भी व्यक्तित्व जब भी ख़ाकसार के दिमाग़ में आता है, तो ऐसा लगता है जैसे आप की ज़ात में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस मुबारक اُطْلُبُوا الْعِلْمَ مِنَ الْمَهْدِ اِلَى اللَّحْدِ की वास्तविक और व्यावहारिक तस्वीर थी। मियां साहिब को अलग-अलग ज्ञान सीखने का बहुत शौक था। कोई भी नई चीज़ मालूम करने और कुछ नया सीखने का अवसर हरगिज़ नहीं छोड़ते थे और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें उनका विशेष और पसंदीदा विषय थे। वह विभिन्न भाषाओं को सीखना पसन्द करते थे। कहते हैं मेहमान नवाज़ी भी एक विशेष गुण था। 2005 ई की बात है जब रुस्तम हम्मादली साहिब सदर जमाअत रशिया जो मास्को के मुअल्लिम भी हैं रूसी क़ुरान के अनुवाद की तैयारी के संबंध में रब्वा आए तो ख़ालिद साहिब कहते हैं कि उन के साथ मिल कर मुझे काम का अवसर मिला। रुस्तम साहिब का निवास उन दिनों गेस्ट हाउस तहरीक जदीद में था। एक बार डिनर के समय, रुस्तम साहिब के मिज़ाज के अनुसार, कुछ वस्तुएं नहीं थी या शायद समाप्त हो गई थीं तो मैं मियां अनस तक यह बात पहुंची। उन्होंने तुरंत मुझे बुलाया और कहा कि रुस्तम साहिब हमारे सम्माननीय अतिथि हैं। यह हमारी पहली ज़िम्मेदारी है कि हम उनकी ज़रूरत की हर चीज़ का ध्यान रखें, और फिर अपनी जेब से पैसे दिए कि अमुक वस्तुएं ले आएं और भविष्य में किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मुझे बताएं। मैंने उन्हें बताया कि व्यवस्था हो गई है और चीजें उपस्थित कर दी गई थीं। फिर बाद में भी इस बारे में नियमित रूप से पूछते रहे।

मुहम्मद सालिक साहिब, बर्मा के मुबल्लिग़ हैं कि श्रीलंका के एक छात्र की घटना ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। एक छात्र मुनीर अहमद श्रीलंका से जामिया में पढ़ने के लिए आया था और वह इस समय श्रीलंका मुबल्लिग़ के रूप में काम कर रहे हैं। जामिया के दौरान एक बार बीमार हो गए । इन की तीव्र बीमारी पर, मियां साहिब बहुत सारी परेशान हो गए दिन रात होस्टल में आकर उन का हाल पूछा करते थे जैसे कि उन का कोई अपना प्रिय हो बीमार हों। यह उन दिनों में मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब जामिया अहमदिया के निर्देशक थे।

शमशाद साहिब अमेरिका से लिखते हैं कि मुरब्बियों के साथ मार्टिंग में उन का अन्दाज़ तब्लीग़ की भावना पैदा करने की होती थी। अध्ययन का बहुत शौक था। मुरब्बियों को भी बार-बार अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहते थे और ख़ुद को हमेशा कार्यालय में किताबों को ढेर लगा कर रखा होता था। लगाता था। बुख़ारी शरीफ का अक्सर अध्ययन किया जाता है। बुख़ारी शरीफ का बहुत अधिक अध्ययन करते थे आने जाने वाले मुरब्बियों से भी इल्मी बातचीत करते रहते थे।

घाना के प्रचारक शाहिद महमूद साहिब लिखते हैं कि मियां साहिब को लगभग बारह साल वकालत इशाअत में मासिक तहरीक जदीद के अंग्रेज़ी हिस्से के सम्पादक के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ था। मियां साहिब से बहुत सी बातें सीखने की मिलीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुहब्बत और ख़िलाफत की मुहब्बत तथा इताअत आप में बहुत अधिक थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के नाम के साथ आप की आंखों में आंसू आ जाते थे। किताबों के अनुवाद और विशेष रूप से ब्राहीन अहमदिया सुर्मा चश्मा आर्या और महमूद की आमीन के अनुवाद के समय मुझ आपने साथ दफ्तर में बिठाया करते थे और कई बार अनुवाद के लिए अपने घर बुलाया करते थे न छुट्टी के दिन की तथा न ही दफ्तर बन्द होने की कोई चिन्ता थी। प्राय: शाम देर समय तक दफ्तर में काम करते रहते थे। इस के बावजूद मेरी मेहमान नवाज़ी और प्रेम का सिलसिला जारी रहता था। और यह कहते हैं कि नमाज़ ज़ुहर के लिए इमामत की मेरी ड्यूटी लगा रखी थी। दफ्तर में ही सारे काम करने वाले नमाज़ पढ़ लेते थे। दफ्तर के काम करने वालों के साथ बहुत दया का व्यवहार करते थे। कहते हैं कि एक बार बीमारी के बावजूद विनीत दफ्तर हाज़िर हो गया मुझे जबरदस्ती छ दिनों की छुट्टी दिला कर घर भिजवा दिया। और घर पर भी काम जारी रखते।

अयाज़ महमूद ख़ान साहिब मुरब्बी वकालत तसनीफ यू.के कहते हैं कि मैंने आप से काम के बारे में बहुत कुछ सीखा है। चूंकि आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की पुस्तकों का अनुवाद बहुत शौक से करते इसलिए अनुवाद के समय जो कठिन स्थान होता उन के हल होते उन के बारे में बताते और अपनी अनुभव भी शेयर करते। एक बात जो आपने विशेष रूप से कही थी, वह यह कि अनुवाद करते समय केवल शाब्दिक रूप से अनुवाद करना ही पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना आवश्यक है कि वह शब्द किसी तरह से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की शान को कम करने वाला तो नहीं? और यदि शाब्दिक अनुवाद सही नहीं है तो मूल लेख को बताने वाला कोई शब्द होना चाहिए। और फिर अनुवाद के काम से ऐसा प्रेम थी कि बीमारी के दौरान भी काम से नहीं रुके। बीमारी के समय कई बार उन्होंने मुझे बताया कि मेरे काम करने की गति कम हो गई है। जब मैं बैठता हूं, तो जितना मैं चाहता हूं उतना नहीं कर पाता, मैं थक जाता हूं, लेकिन फिर भी मैं अभी भी छ: सात घंटे बैठ जाता हूं और लगातार काम करता हूं। वैसे तो उन को मैंने बारह बारह तेरह तेरह घंटे बल्कि पंद्रह घंटे काम करते देखा है।

अयाज़ साहिब लिखते हैं कि जब हम रब्वा गए तो मियां साहिब ने भी हमारी कुछ कक्षाएं ली थीं और उस समय भी कहते थे और बाद में जब भी मैंने उनसे बात की, तो उन्होंने कहा कि तुम लड़के साहित्य भी पढ़ा करो और हर तरह की किताब पढ़ने की आदत डालो। केवल यही नहीं की धार्मिक पुस्तकें भी पढ़ते रहो। दर्शन भी पढ़ो, साहित्य भी पढ़ो, उपन्यास भी पढ़ें। इस से भाषा और ज्ञान विस्तृत होता है। और मुझे कहते थे कि तुम्हारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि तुम अनुवाद का काम करते हो। यह कहते हैं कि एक बार मैंने एक कठिन शब्द के अंग्रेज़ी अनुवाद के बारे में पूछा, कि आप के विचार में इस का अंग्रेज़ी अनुवाद क्या होना चाहिए? मियां साहिब थोड़ी देर सोच में पड़ गए। फिर मुझे दो तीन शब्द बताए। मैंने मियां साहिब को बताया कि हज़रत चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब ने इस शब्द का अंग्रेज़ी में इस

तरह अनुवाद किया है। वह उस पर बहुत ख़ुश हुए और कहा कि यह ठीक है। यह सही अनुवाद है और हज़रत चौधरी साहिब के लिए बहुत सम्मान और श्रद्धा के साथ कहने लगे कि उन की भाषा बहुत अच्छी थी। तुम भी उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करो। फिर अयाज़ साहिब कहते हैं कि मैंने हमेशा देखा कि मियां साहिब अपनी अक्ल और समझ को समय की ख़लीफा के सामने बिल्कुल न होने के बराबार जानते थे। पहले अगर आपकी कोई राय होता थी तो जब मैं बताता कि समय कि ख़लीफा ने(मेरा हवाला देते) यूं कहा है तो शीघ्र ही कहते कि हां बस ठीक है। मैं ग़लत था जो हुज़ूर ने कहा वही ठीक है और इस तरह बार बार मुझे शिक्षा दी कि समय के ख़लीफा के सामने अन्य सभी चीजें व्यर्थ हैं। वही राय सही है जो समय का ख़लीफा दे और हमारे लिए आवश्यक है कि इसका पालन करें।

शेख नसीर साहिब रूसी डेस्क के कार्यकर्ता हैं। यह कहते हैं कि मियां साहिब के साथ 16 साल का समय वकालत इशाअत में व्यतीत किया। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। हमेशा एक प्यारे दोस्त की तरह पाया। उन्होंने कभी भी ख़ाकसार को अधीन महसूस होने की अनुमति नहीं दी। अगर मुझे कभी महसूस होता और महसूस करता कि मेरे माता-पिता नहीं हैं तो उन्होंने हमेशा कहा कि तुम मुझे उनकी जगह समझो फिर वह लिखते हैं कि सभी काम करने वालों के साथ दया का व्यवहार किया करते थे। यदि कभी-कभी मेरी ग़लती के कारण कुछ मामूली डांट भी दिया करते तो उसे याद रखते और अगले दिन कहते कि तुम ने मुझे माफ कर दिया था न? मैं कहता मियां मुझे तो महसूस भी नहीं हुआ कि आप ने मुझे झिड़का है। यदि आप को कभी ग़ुस्सा आता तो आप चुप हो जाते हैं और हमें पता चल जाता कि मियां साहिब नाराज़ हैं लेकिन थोड़ी देर बाद, किसी और काम के लिए फोन आ जाता और कोई बात दिल में नहीं रखते थे। और जब भी ख़लीफातुल मसीह की तरफ से कोई काम सपुर्द किया जाता तो सम्बन्धित काम करने वाले के साथ मीटिंग कर के काम करने का तय कर कि कैसे करें और जो सब से मुश्किल काम होता अपने ज़िम्मे ले लेते और बीमारी के बावजूद घर में रहते हुए भी वह काम पूर्ण करने की कोशिश करते। जब कार्यालय में आने में कठिनाई महसूस होती थी, तो कार्यकर्ता को घर में बुला लेते थे और वहीं दफतर लगा लेते थे। विश्राम और अवकाश की कोई अवधारणा नहीं थी। पलंग पर लेटे लेटे अनुवाद का काम करते रहते थे। कई बार ख़ाकसार के साथ साइकिल पर बैठकर दफ्तर जाते।

एक कार्यकर्ता ज़ाहिद महमूद मजीद साहिब कहते हैं कि आदरणीय मियां साहिब के साथ काम करने का अवसर मिला। आप ख़िलाफ़त के शीदाई थे। जब फैक्स लिखनी होती तो आप को (मुझे सम्बोधित कर रहे हैं।) एक विशेष भावनात्मक स्थिति छा जाया करती थी और अगर यहां मेरी तरफ से कोई काम उन के सुपुर्द होता तो उसे पूर्ण करने के लिए व्याकुल रहते थे। अगर सेहत आड़े आती तो बहुत परेशान हो जाया करते थे। यही महमूद मजीद साहिब का कहना है कि ख़ाकसार की किडनी में पत्थर थे जिस का आपरेशन फज़्ले उमर अस्पताल में हुआ। कहते हैं कि मेरे पिता जी बताते हैं कि जब तक ऑपरेशन नहीं हो गया आपरेशन थेयटर के बाहर टहलते रहे और दुआ करते रहे।

मोहम्मदुद्दीन भट्टी साहिब इशाअत के काम करने वाले हैं। वह कहते हैं कि इन के साथ मैं ने1995 ई से वफात तक काम करने की कार्यकर्ता हैं जो कहते हैं कि उनके साथ मैं 1995 तक काम करने की तौफ़ीक़ पाई पाया। मियां साहिब मरहूम काम करने वाले के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करते थे। जब भी अपने पास किसी काम से बुलाते तो कहते कि कुर्सी पर बैठ जाएं फिर बात शुरु करते। जब कभी आप की तरफ से किसी कार्यकर्ता पर नाराज़गी का प्रकटन होता तो उस के बाद शीघ्र ही दया वाला रूप धारण कर लेते यहां तक कि कई बार क्षमा मांगने की अवस्था आ जाती। कहते हैं एक बार मियां साहिब ने किसी काम का कहा और विनीत ने मियां साहिब को मना कर दिया। नकारात्मक उत्तर दिया हालांकि मुझे से यह गुस्ताख़ी हुई मगर उन्होंने उसे क्षमा कर दिया। और केवल इतना कहा कि आपको ऐसी बात का जवाब नहीं देना चाहिए था। कहते हैं विनीत काफी समय कर घुटनों की तकलीफ के कारण समय पर कार्यालय नहीं पहुंच सकता था। जब लेट हो जाता तो मेरी हाज़री ख़ाना में क्रास लग जाता और कुछ क्रास इस तरह के लग जाएं तो फिर छुट्टी शामिल होती है। तो कहते हैं कि मियां साहिब ने ख़ुद वकील आला साहिब से सिफारिश की कि इस की तकलीफ है, इस लिए इस को क्रास न लगाया जाए। कहते हैं मियां साहिब ग़रीब छात्रों बेरोज़गारों और विधवाओं का विशेष ध्यान रखते थे। छात्रों को किताबें और स्कूल यूनिफार्म ख़रीद कर देते थे। बेरोज़गारों की नौकरियों के लिए सिफारिशी पत्र दिया करते थे।

एहसानुल्लाह साहिब मुरब्बी सिलसिला घाना का कहना है कि इन की छत्रछाया में नौ साल तक काम किया। ख़िलाफत की मुहब्बत और सम्मान से भरे हुए थे। बहुत सूक्ष्म रूप में अपने साथ काम करने वालों के दिलों में यह मुहब्बत डाला करते थे। एक बार बुला कर विनीत को पास बिठा लिया और कहां के हुज़ूर को फैक्स लिख रहा हूं। यह अभी करनी है फिर फैक्स लिखना आरंभ की तो हज़रत ख़लीफतल मशीन अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के अल्फाज़ लिखकर सोच के आलम में इन शब्दों पर कुछ नजरें जमाए रखीं फिर बड़े भावनात्मक रूप में ख़िलाफत के बारे में अन्य बातों का वर्णन करते रहे।

यह कहते हैं कि अधीनस्थों के ऊपर दया का एक अजीब क्रम था किसी को अपने सामने खड़ा नहीं रहने देते थे। बहुत अधिक बीमारी और कमज़ोरी की अवस्था में भी प्रसन्नचित रहते थे और किसी को एक दिन डांट दिया तो दूसरे दिन इतना उसका दिल प्रसन्न किया कि कई बार लज्जा अनुभव होती हालांकि डांट क्या होती थी? ऊंची आवाज़ हो जाती थी और बस। ना कोई कठोर शब्द न कोई दिल को चुभने वाली बात। अगर किसी को दफ्तर में कठोरता करते देखते तो इस व्यवहार से दुखी होते।

मुहम्मद तल्हा साहिब जामिया अहमदिया में तख़स्सुस विभाग में हदीस के उस्ताद हैं कहते हैं तखसीस के समय लगभग एक साल आदरणीय मिर्ज़ा अनस अहमद साहिब से विनीत और मुकर्रम सय्यद फहद मुरब्बी सिलसिला को हदीस पढ़ने का अवसर मिला। अन्य ज़िम्मेदारियों और तबीयत की ख़राबी के बावजूद आप की हर संभव कोशिश हुआ करती थी कि कोई दिन ऐसा ना गुज़रे जिस में हदीस की कक्षा ना हो। एक बार तबीयत बहुत ज्यादा ख़राब होने के कारण से दफ्तर नहीं आ सके तो हमें पढ़ाई के लिए अपने घर बुला लिया।

आसिफ ओवैस मुरब्बी सिलसिला वकालत इशाअत लिखते हैं कि विनीत की पोस्टिंग आरम्भ में कुछ समय के लिए इशाअत में हुई। यह कुछ महीने मेरी ज़िन्दगी की यादगार दिन थे। प्रत्येक अवसर पर बहुत दया से मियां साहिब ने ध्यान रखा। मेरी और उनकी आयु का कम से कम 55 वर्ष से अधिक का अन्तर था परंतु उनके साथ ऐसा अनुभव होता था कि जैसे यह अन्तर नाम का ही है। बातचीत भी शानदार होती थी। महफिल को ख़ुश रखने के लिए मज़ाक़ भी किया करते थे। यह कहते हैं कि उनके अनुवाद अहमद बिन हंबल का काम मेरे ज़िम्मा है इस आयु और सेहत के बहुत अधिक ख़राब होने की अवस्था में भी उनके काम को जारी रखने की हिम्मत बला की थी मायूसी या काम ना हो सकने का विचार भी पास न आया करता था।

जामिया अहमदिया रब्वा के छात्र मुहम्मद काशिफ कहते हैं कि विनीत के मकाला का विषय ख़ुल्फाए अहमदियत के प्राइवेट सैक्रेटरी के हवाले से थे। पिछले कई महीनों से आप की सेवा में कई बार हाज़िर हुआ। अल्हमदो लिल्लाह उन्होंने बड़े प्यार से बहुत कीमती समय ख़ाकसार को दिया। बीमारी में भी विस्तृत साक्षात्कार दिए। एक बार बहुत दर्द भरी आवाज़ में कहने लगे कि मनुष्य के प्रयास और परिश्रम कुछ भी नहीं हैं यह मेरे जीवन का सारांश है। जो कुछ भी है अल्लाह तआला का फज़्ल है और फिर ख़िलाफत से सम्बन्धित है?

रब्वा से आसिफ अहमद ज़फर कहते हैं कि वफात से कुछ समय पहले ताहिर हार्ट में दाख़िल हुए। उनकी देखभाल के लिए मैं गया था। बावजूद बहुत अधिक बीमारी के और उस समय भी चेहरे पर मास्क लगा हुआ था। यह ऑक्सीजन का होगा। जब मैंने अपना परिचय दिया, तो ख़ुद अपना मास्क उतारा और बात करना शुरू की। इस पर, मैंने स्वास्थ्य के बारे में कहा कि अल्लाह तआला फज़्ल फरमाएगा। इन्शा अल्लाह तो उन्होंने कहा अल्लाह तआला का बुला लेना भी तो एक फज़्ल है। मैं उनके शब्दों को सुनकर हैरान रह गया कि इस अवस्था में भी अल्लाह तआला पर यह भरोसा और मृत्यु की कोई चिंता नहीं।

विभिन्न लोगों ने ख़िलाफत से संबंधित जो लिखा है इस में कोई अतिशियोक्ति नहीं बल्कि इस से बढ़ कर उन का सम्बन्ध था उन्होंने अपने प्रत्येक कर्म से इस को प्रकट किया है। और बल्कि, जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने जब मुझे स्थानीय अमीर और नाजिर आला के रूप में स्थापित किया है, तो उस समय भी ख़िलाफत की आज्ञाकारिता के कारण, उन्होंने अमीर की भी पूर्ण इताअत की और बहुत ध्यान रखा बावजूद इस कि मैं आयु में उन से कम तेरह, चौदह साल छोटा था और पूरी तरह से आज्ञाकारी भी था। और उन्होंने हमेशा पूर्ण वफा का नमूना ख़िलाफत के बाद भी दिखाया। पूर्ण इताअत का नमूना दिखाया।

अल्लाह तआला उन से रहम और माफी का व्यवहार करे और अल्लाह तआला की कृपा प्राप्त करने का जो उन्होंने जिस बात को प्रकट किया है अल्लाह तआला

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 31 January 2019 Issue No. 5

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

उन की इच्छा को पूरा करे। उन को प्यारों में स्थान दे और उन की औलाद को भी ख़िलाफत से वफा का सम्बन्ध रखने वाला बनाए।

जब आदरणीय मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की मृत्यु हुई, तो उन्होंने सपना देखा था जिस का मैंने इस ख़ुत्बा में वर्णन किया है। मुझे लिखा है कि परसों रात जब मियां साहिब की मृत्यु हुई, तो उस समय के लगभग मैं ख़्वाब देख रहा था कि भाई खुर्शीद और मियां अहमद अल्लाह तआला के पास चले गए हैं और उन की मुलाक़ात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के साथ हो रही है उस समय मेरे दिल में इच्छा पैदा हुई कि अल्लाह तआला करे कि मेरी मुलाक़ात भी इस तरह हो जाए। तो मैंने निवेदन किया, हे अल्लाह! मुझे भी अपने निकट बुला ले, तो अल्लाह तआला ने अपने निकट स्थान दे दिया। इस प्रकार अल्लाह तआला ने उन के क्षमा और दया की ख़बर उन को दे दी। बहरहाल अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करता चला जाए और आगे उन की औलादें भी नेक तथा सालेह हूं।

(अलफज़ल इंटरनेशनल 11 से 17 जनवरी 2019 पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

बिंदु जिस पर कई पर्टियां और राजनेताओं ने ज़ोर दिया है कि उन्हें अपने दैनिक खर्च और प्रवासियों को संभालने के लिए हुकूमत को बहुत सा खर्च करना पड़ता है। जिस से सरकार पर बोझ पड़ता है, और अंतत: इस से स्थानीय कर देने वाले प्रभावित होते हैं। वे स्थानीय लोग जो एक देश में रहते हैं और निवास करते हैं, वे यह पूछने का अधिकार रखते हैं कि क्या यह उचित है कि न के टैक्स का रूपया बजाय उन के कल्याणकारी परियोजनाओं पर खर्च करने के विदेशी शरणार्थियों को रखने पर खर्च किया जा रहा है।? मैं इस बहस में नहीं पड़ता कि ये वास्तविक मुद्दे हैं और चिंता का मुख्य कारण हैं। लेकिन अगर वे ठीक तरह से हल नहीं होते हैं, तो समाज में तनाव बढ़ाऐगा। जब भी बड़े पैमाने पर प्रवास होता है, वहां शांति और सुरक्षा की समस्याएं होती हैं। बेशक, शरणार्थियों में कुछ छुपे हुए तत्व इस तरह के भी होंगे जो भारी क्षति का कारण बन सकते हैं। उदाहरण के लिए कुछ दिन पहले जर्मनी में रहने वाली एक स्थायी अप्रवासी महिला का इन्टि्वयू लिया गया। यह इराक में अपहरण कर के रखी गई थी और दासी बना कर रखी गई थी। उन्होंने बताया कि कैसे डर और झटका लगा कि उस का अपहरण करने वाला भी जर्मनी में स्वतंत्र रूप से घूम रहा है और वह जर्मनी में उत्पीड़न के पीड़ितों का शिकार होने वालों की आड़ लेकर दाख़िल हुआ है। यह वह मामला है जिस के बारे में मैं पहले सूचित कर चुका हूं। इसलिए, मैं कहता हूं कि हर मामले को व्यक्तिगत रूप से पहचाना जाना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई चरमपंथी आतंकवादी शरणार्थी के रूप में हरगिज़ प्रवेश न होने पाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बहरहाल इस से मालूम होता है कि मुस्लिम देशों से व्यापक रूप से हिजरत का भय न्यायसंगत है लेकिन एक इंसाफ करने वाले, बुद्धिमान व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह छवि के दोनों रुख देखे और जल्दबाजी में मुसलमानों और इस्लाम के बारे में कोई राय मत स्थापित करें। सिर्फ इसलिए कि एक व्यक्ति इस्लाम को चरम पंथ धर्म के रूप में कहता है या यह दावा करता है कि सभी मुस्लिम आतंकवादी हैं, यह दावा अपने अन्दर कोई सच्चाई नहीं रखता बल्कि यह आवश्यक है कि सभी तथ्यों को पूरी तरह समझा जाए, समीक्षा कीजिए तो इससे पहले कि यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि इस्लामिक शिक्षाएं अपने भीतर अतिवाद का तत्व रखती हैं, आपको चाहिए की इस की पूरी तरह से अनुसंधान करें और सत्य क्या है देखना चाहिए? इस की समीक्षा करें कि क्या कुछ तथा कथित लोगों की बुराई वास्तव में इस्लामी शिक्षाओं के कारण है? सोचें कि क्या इस्लाम वास्तव में चरम पंथ की अनुमति देता है या नफरत और भ्रष्टाचार फैलाने वालों के लिए गंभीर दंड का प्रस्ताव करता है? क्या इस्लाम मुसलमानों को धर्म के नाम पर कानून तोड़ने की इजाज़त देता है? मुस्लिम मुसलमानों से सामाजिक सौंदर्य की उम्मीद क्या रखता है? क्या इस्लाम यह कहता है कि रियासत पर बोझ बनो या फिर कड़ी मेहनत कर के हौसला को बढ़ाता है और देश से वफादारी तथा समाज के सुधार में सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए कहता है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यदि यह साबित हो जाए कि वे मुसलमान जो ग़लत काम करते हैं वे इस्लाम से प्रभावित होकर ऐसा करते हैं फिर शायद यह कहना ठीक है कि दायां बाज़ू वालों की चिंताएं सही हैं। लेकिन अगर इस तरह कि तथा कथित मुसलमानों के ऐसे कृत्य इस्लाम से भी संबंधित नहीं हैं तो फिर उन के पास क्या उत्तर होगा? कौन ज़िम्मेदार होगा अगर यह साबित हुआ है कि इस्लाम विरोधी जमाअत केवल तथ्यों के बजाय नफरत को फैला रही हैं जिनका आधार वास्तविकता के स्थान पर केवल कल्पना है? इस थोड़े से समय में मैं कुछ सुझाव प्रस्तुत करूंगा, मुझे आशा है कि इस से आप को कुछ सवालों के जवाब जानने में मदद मिलेगी और आप मूल इस्लामी शिक्षाओं की अंतर्दृष्टि को समझ सकेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : सब से पहले इस्लाम का मूल सिद्धांत यह है कि जहां व्यक्ति शांति से रहता है वहाँ उस का कर्तव्य है कि वह दूसरों के लिए भी शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करे। लोग अक्सर उन युद्धों की वर्णन करते हैं जो इस्लाम के शुरुआती दौर में हुए और यह साबित करने का प्रयास करते हैं कि इस्लाम एक ख़ून बहाने वाला धर्म है जो उतपीड़न और बल की अनुमति देता है। हालांकि, तथ्य यह है कि मुसलमानों ने तेरह वर्ष तक आरम्भ में सबसे अधिक असाधारण उत्पीड़न को सहन किया और कोई कार्रवाई नहीं की। फिर जाकर अल्लाह तआला ने अपनी प्रतिरक्षा की आज्ञा की अनुमति दी। यह अनुमति पवित्र क़ुरआन के सूरह हज्ज की आयतों 40 और 41 में वर्णन हैं, जिन की अभी मेरे भाषण से पहले आपके सामने तिलावत की गई। इन आयतों में अल्लाह तआला ने उन लोगों का वर्णन किया है जिन का दमन किया गया था और घरों से निष्कासित कर दिया गया था, उन्हें ख़ुद को अधिक उत्पीड़ित होने से बचाने की इजाज़त थी। हालांकि, क़ुरआन आगे बताता है कि यदि मुस्लिम अपने धर्म की रक्षा नहीं करते हैं तो चर्च, मंदिर, स्मारक, मस्जिद और सभी पूजा स्थानों को भी खतरे में डाल दिया जाएगा। इसलिए, यह अनुमति सभी लोगों के अधिकार स्थापित करने के लिए दी गई थी ताकि वे अपनी धार्मिक शिक्षाओं के अनुसार स्वतंत्र रूप से रह सकें।

क़ुरआन मजीद में, सूरत अल-यूनुस आयत 100 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करते हुए फरमाता है कि यदि वह चाहता है तो अपनी इच्छा सब पर डाल देता और सभी लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर करता। लेकिन इसके विपरीत अल्लाह तआला ने धर्म की स्वतंत्रता दी। इसी तरह सूर: कहफ़ की आयत 30 में अल्लाह तआला फरमाता है कि मुसलमानों को खुलेआम अपना संदेश पहुँचाना चाहिए और यह घोषणा करनी चाहिए कि इस्लाम सच्चा धर्म है लेकिन इसके साथ यह भी कह दिया कि हर कोई स्वतंत्र है चाहे स्वीकार करे या इन्कार करे। आयत कहती है कि जो भी ईमान लाता है या इन्कार करता है, वह स्वतंत्र है। इसी प्रकार, क़ुरआन मजीद उन ग़ैर-मुसलमानों की तरफ इशारा करता है जो स्वीकार करते हैं कि इस्लाम शांतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण धर्म है, लेकिन फिर भी वे ईमान लाने से इन्कार करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि शांति और भाईचारा के मार्ग को अपनाने से उनके सांसारिक हितों को नुकसान पहुंचेगा। इसी प्रकार क़ुरआन मजीद की सूरत कसस आयत 58में वर्णन है कि वह कहते हैं कि यदि वे तुम्हारे मार्गदर्शन का पालन करें, तो वे अपनी भूमि से छीन लिए जाएंगे।

यह इस्लाम की मूल शिक्षा है। यह हर मुसलमान को शांतिपूर्ण समाज में रहने और इस के सुधार में सकारात्मक योगदान देने की मांग करता है। बेशक, वे मुसलमान जो जिहाद का दावा करते हैं वे इस से ग़ैर मुस्लिमों पर हमला करना अभिप्राय लेते हैं या उन्हें ज़बरदस्ती इस्लाम में प्रवेश करना यह दृष्टिकोण भी बिल्कुल झूठा है। इस कर्म तथा इस पर की धारणाओं से इस्लाम की शिक्षाओं का कोई संबंध नहीं है।

(शेष.....................)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad